earyasamaj.org
ebsite : www.akhilbharathindumahasabha.org
mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

-39 अंक-13
ल्पादि सम्वत् 1972949115
सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक 17 जून से 23 जून 2015 तक
प्र.आषाढ़ शु० एकम् से प्र.आषाढ़ शु० सप्तमी सम्वत् 2072 तक
वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

पांव पसार रही... पृष्ठ- 3
गुणकारी टमाटर... पृष्ठ- 4
अग्नि अवतार... पृष्ठ- 5
A MISUNDERSTOOD.. पृष्ठ- 9
मौसम के साथ.. पृष्ठ- 12

- उसी डाल को काटने लगे आप
- सर्वोच्च न्यायालय को चिन्ता कि भारत कब तक सेकुलर रह पायेगा
- सभी भारतीयों की धमनियों में आज भी हिन्दू खून है!
- जम्मू कश्मीर में नया प्रयोग कई प्रश्नों के उत्तर दे सकता है
- सुरसा की तरह पसरता बोतलबंद पानी का धंधा
- शिक्षा की दशा और दिशाहीनता

सीमा पार से आतंकी घुसपैठ, ६-७ आतंकी भारत में घुसे

• संवाददाता •

जम्मू-कश्मीर के तंगधार सेक्टर में नियंत्रण रेखा के नजदीक फिर से आतंकियों ने भारतीय सीमा पर घुसपैठ की कोशिश की। लेकिन सेना के जवानों ने घुसपैठ की कोशिश को नाकाम कर दिया। हालांकि खबर है कि ६–७ आतंकी भारत में घुसने में कामयाब हो गये हैं। सीमा से सटे घरों में इनके छिपे होने की आशंका है। आतंकी घुसपैठ की बढ़ती आशंका के मद्देनजर सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट कर दिया गया है। सेना और आतंकियों के बीच करीब शेष पृष्ठ 11 पर

ारतवंशी कारोबारी सिंगापुर में सम्मानित

• संवाददाता •

एक भारतवंशी कारोबारी को सिंगापुर में उनके सराहनीय लोकसेवा कार्यो के लिए सम्मानित किया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्लैकस्टोर के वरिष्ठ

प्रबंध निदेशक और इसके एशिया संचालन समिति के सह–अध्यक्ष गौतम बनर्जी को प्रतिष्ठित पब्लिक सर्विस मेडल प्रदान किया गया। यह मेडल उन्हें राष्ट्रपति टोनी टैन केंग याम ने प्रदान किया। बनर्जी ब्लैकस्टोन सिंगापुर के अध्यक्ष भी हैं। बनर्जी १६ साल की अवस्था में मुंबई से सिंगापुर चले गए थे। उन्होंने ३० साल से अधिक समय तक प्रमुख वित्तीय कंपनी प्राइसवाटरहाउसकूपर्स के साथ काम किया। नौ साल तक वह इस कंपनी में कार्यकारी अध्यक्ष रहे। इस पद पर वह दिसंबर २०१२ में सेवानिवृत्त होने तक रहे। वह एक बार सिंगापुर के सांसद भी मनोनीत किए जा चुके हैं। बनर्जी अभी सिंगापुर एयरलाइंस लिमिटेडए इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेड के बोर्ड सदस्य हैं और सिंगापुर बिजनेस फेडरेशन के उपाध्यक्ष हैं। वह इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स इन इंगलैंड एंड वेल्स और इंस्टीट्यूट ऑफ सिंगापुर चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के फेलो हैं। सिंगापुर आर्थिक विकास बोर्ड के अध्यक्ष बेह स्वान गिन ने एक बयान में कहा उनके मजबूत सहयोग से विभिन्न क्षेत्रों में नई संभावनाओं का विकास हुआ और सिंगापुर के लोगों के लिए रोजगार के रोमांचक अवसर पैदा हुए।

Thearyasamaj.org

ब्रह्यज्ञानी गुरु अर्जुन देव

गुरु अर्जुन देव जी शहीदों के सरताज एवं शान्तिपुंज हैं। आध्यात्मिक जगत में गुरु जी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उन्हें ब्रह्यज्ञानी भी कहा जाता है। गुरुग्रंथ साहिब में तीस रागों में गुरु जी की वाणी संकलित है। गणना की दृष्टि से श्री गुरुग्रंथ साहिब में सर्वाधिक वाणी पंचम गुरु की ही हैं। गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन गुरु अर्जुन देव जी ने भाई गुरदास की सहायता से १६०४ में किया। गुरु ग्रंथ साहिब की संपादन कला अद्वितीय है, जिसमें गुरु जी की विद्वत्ता झलकती है। उन्होंने रागों के आधार पर ग्रंथ साहिब में संकलित वाणियों का जो वर्गीकरण किया है, उसकी मिसाल मध्यकालीन धार्मिक ग्रंथों में दुर्लभ है। यह उनकी सूझबूझ का ही प्रमाण है कि ग्रंथ साहिब में ३६ महान वाणीकारों की वाणियां बिना किसी भेदभाव के संकलित हुई हैं।

अर्जुन देव जी गुरु रामदास के सुपुत्र थे। उनकी माता का नमा बीवी भानी जी था। सिख संस्कृति को गुरु जी ने घर–घर तक पहुंचाने के लिए अथाह प्रयत्न किए। गुरु दरबार की सही निर्माण व्यवस्था में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। १५६० ई० में तरनतारन के सरोवर की पक्की व्यवस्था भी उनके प्रयास से हुई। ग्रंथ साहिब के संपादन को लेकर कुछ असामाजिक तत्वों ने अकबर बादशाह के पास यह शिकायत की कि ग्रंथ में इस्लाम के खिलाफ लिखा गया है, लेकिन बाद में जब अकबर को वाणी की महानता का पता चला, तो उन्होंने भाई गुरदास एवं बाबा बुढ्ढा के माध्यम से ५१ मोहरें भेंट कर खेद ज्ञापित किया। जहाँगीर ने लाहौर में १६ जून १६०६ को अत्यंत यातना देकर उनकी हत्या करवा दी। गुरु जी शांत और गंभीर स्वभाव के स्वामी थे। वे अपने युग के सर्वमान्य लोकनायक थे, जो दिन–रात संगत सेवा में लगे रहते थे। उनके मन में सभी धर्मों के प्रति अथाह स्नेह था। मानव–कल्याण के लिए उन्होंने आजीवन शुभ कार्य किए।

अकबर के देहांत के बाद जहांगीर दिल्ली का शासक बना। वह कट्टर–पंथी था। अपने धर्म के अलावा, उसे और कोई धर्म पसंद नहीं था। गुरुजी के धार्मिक और सामाजिक कार्य भी उसे सुखद नहीं लगते थे। कुछ इतिहासकारों का यह भी मत है कि शहजादा खुसरो को शरण देने के कारण जहांगीर गुरुजी से नाराज था। १५ मई, १६०६ ई. को बादशाह ने गुरु जी को परिवार सहित पकड़ने का हुक्म जारी किया। तुज्के–जहांगीरी के अनुसार उनका परिवार मुरतजाखान के हवाले कर घरबार लूट लिया गया। इसके बाद गुरुजी ने शहीदी प्राप्त की। अनेक कष्ट झेलते हुए गुरुजी शांत रहे, उनका मन एक बार भी कष्टों से नहीं घबराया। तपता तवा उनके शीतल स्वभाव के सामने सुखदाई बन गया। तपती रेत ने भी उनकी निष्ठा भंग नहीं की। गुरु जी ने प्रत्येक कष्ट हंसते–हंसते झेलकर यही अरदास की–

तेरा कीआ मीठा लागे, हरि नामु पदारथ नानक मांगे।।

गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित वाणी ने भी संतप्त मानवता को शांति का संदेश दिया। सुखमनी साहिब उनकी अमर–वाणी है। करोडों प्राणी दिन चढ़ते ही सुखमनी साहिब का पाठ कर शांति प्राप्त करते हैं। सुखमनी साहिब में चौबीस अष्टपदी हैं। यह रचना सूत्रात्मक शैली की है। इसमें साधना, नाम–सुमिरन तथा उसके प्रभावों, सेवा और त्याग, मानसिक दुख–सुख एवं मुक्ति की उन अवस्थाओं का उल्लेख किया गया है, जिनकी प्राप्ति कर मानव अपार सुखों की उपलब्धि कर सकता है। सुखमनी शब्द अपने–आप में अर्थ–भरपूर है। मन को सुख देने वाली वाणी या फिर सुखों की मणि इत्यादि।

सुखमनी सुख अमृत प्रभु नामु।
भगत जनां के मन बिसरामु।।

सुखमनी साहिब सुख का आनंद देने वाली शेष पृष्ठ 10 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह ज्यादातर लोगों को नौकरी व व्यवसाय में लाभ होने की सम्भावना है। पति व पत्नी में वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। पैतृक सम्पत्ति में विरोधाभास होने की आशंका है। छात्रों का मन विचलित हो सकता है, अतः दिल की बातें जुबान पर लाना ही हितकर रहेगा।

वृष - इस सप्ताह आपके सामने बहुप्रतिक्षित परिवर्तन आ सकते हैं। आपको सतर्कता से काम लेना होगा। परिवार में किसी से मनमुटाव हो सकता है। आपका मन दुःखी होगा जिसकी वजह से आपकी दिनचर्या बाधित होगी। कुछ लोगों के स्वास्थ्य में शिथिलता आ सकती है।

मिथुन - इस सप्ताह आप अत्यधिक धन उपार्जन करने को लेकर मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। नये लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान होंग हर सुझाव पर आप पूरी उर्जा के साथ सुधार करने का प्रयास करेंगे जिससे आपके आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी।

कर्क - इस सप्ताह आप–अपने परिवार की समस्याओं को लेकर काफी तनाव ग्रस्त रहेंगे जिससे आपके अपने कार्यों में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं। शारीरिक समस्याओं से आप ग्रस्त रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा लेकिन स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कर्क - इस सप्ताह आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी। वाणी में मधुरता बनायें रखना अतिआवश्यक है। कुछ लोगों का रूका हुआ धन भी मिल सकता है। आप दूसरों के प्रति बेहतर सोचें यह प्रवृत्ति आपको सुखद अनुभूति करायेगी।

सिंह - इस सप्ताह कुछ नये अवसर मिलेंगे जिनका उचित ढ़ंग से दोहन करना जरूरी है। परिवार में सुख व समृद्धि रहेगी, नवीन योजनायें बनेगी। किसी चीज की चोरी होने की आशंका है। घरेलू खर्चों में वृद्धि बनी रहेगी जिससे मानसिक विकार उत्पन्न हो सकता है।

कन्या - इस सप्ताह आलस्य को त्याग कर सक्रियता अपनानी होगी। बीता हुआ समय वापस नहीं आता है, इसलिए अफसोस करने से बेहतर होगा, सही ढ़ंग से कार्य करना। शिथिलिता के पश्चात ही कार्य पूरा होगा। वाद, विवाद, न्याय आदि में सफलता प्राप्त होगी।

तुला - इस सप्ताह किसी को भी झूठे आश्वासन न दें, अन्यथा आप की छवि खराब होने के आसार नजर आ रहे हैं। आप–अपने परिवार के प्रति विशेष ध्यान दें तभी आप मानसिक रूप से स्वस्थ रह पायेंगे। जीविका सम्बन्धी किये गये प्रयास फलीभूत होंगे।

वृश्चिक - जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया। हाथ पैर हाथ रखकर बैठकर रहने से समस्याओं का हल नहीं होगा। अनावश्यक खर्चो पर विराम लगने की सम्भावना है। महिलायें कोई भी निर्णय सोच–समझकर लें तो अच्छा रहेगा।

धनु - इस सप्ताह घर व ऑफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। जिसके कारण कई समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं। इस सप्ताह आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ हंसी–मजाक में समय व्यतीत होगा।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों को घबराहट व बचैनी होने की आशंका नजर आ रही है। आप–अपने निर्णय स्वयं लेने की आदत डालें वरना आप हमेशा दूसरे पर आश्रित रहेंगे। देखा–देखी में आकर कोई कार्य न करें बल्कि जो आप कर सकें उसे करने की कोशिश करें।

कुम्भ - आपको सावधान रहने की आवश्यकता अन्यथा किसी कारणवश व्यर्थ के विवाद में आप फंस सकते हैं। मोह और अपेक्षा ही दुःख के कारण होते हैं, अतः आप इन सब चीजों से जितना दूर रहेंगे उतना ही आप सुख के करीब रहेंगे।

मीन - किसी समस्या को सुलझाने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी। इस सप्ताह दिल से नहीं बल्कि दिमाग से कार्य करने की आवश्यकता है। सन्तान के स्वास्थ्य को लेकर मन चिन्तित रहेगा। अनचाहे सम्बन्धों को ढ़ोने के प्रयास विफल साबित होंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।

जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते; क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।।१६।।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्तोऽयं पुराणोन हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है; क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है; शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।।२०।।

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।।

हे पृथापुत्र अर्जुन! जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है, वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है?।।२१।।

earyasamaj.org

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
िनांक 17 जून से 23 जून 2015 तक

अध्यक्षीय

ांव पसार रही महंगाई डायन

जून शुरू होते ही महंगाई डायन ने अपने हाथ और ला लिये हैं। आम जनता पर बोझ और बढ़ गया है। क्योंकि दी सरकार के केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा आम बजट २०१५–१६ प्रस्तावित सेवा कर में वृद्धि एक जून २०१५ से लागू हो गयी । इसके साथ ही वर्तमान में १२.३६ फीसदी सेवा कर की दर ढ़कर १४ फीसदी हो जाएगी। महंगाई की इस नई किस्त से जाना की तमाम सेवाओं के लिए आपकी जेब और ज्यादा ढीली होगी। कहने का मतलब ह है कि मोदी सरकार की अर्थनीति के चलते आम आदमी की जिंदगी में मुश्किलें और ढ़ जाएंगी। सेवा कर की नई दरें लागू होने से घर खरीदना महंगा हो जाएगा। इसका सर निर्माणाधीन घरों पर भी पड़ेगा। प्रापर्टी की कीमतें बढ़ने के साथ नए खरीददारों को र खरीदने के लिए अधिक कीमत चुकानी होगी। रेस्टोरेंट में खाना, होटल में ठहरना, नोरंजन, हवाई यात्रा, ट्रेनों के एसी क्लास के टिकट, माल ढुलाई, केटरिंग, सैलून, शराब, मा प्रीमियम, टिकट बुकिंग आदि महंगे हो गये हैं। अभी हाल में उद्योग संगठन भारतीय ाणिज्य एवं उद्योग मंडल सोचैम के एक सर्वेक्षण से यह त सामने आई है कि महानगरों र बड़े शहरों में अधिकाधिक ग घर में खाना बनाने की जाय बाजार में बिकने वाले रेडी ईट खाद्य पदार्थों का सहारा रहे हैं। इस सर्वेक्षण में ७८ प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि रसोई के बजट को यंत्रित करने की सारी कोशिशें नाकाम साबित हुई हैं। सर्वेक्षण के अनुसार बेमौसम रसात की वजह से पैदावार घटने से पर्याप्त आपूर्ति नहीं होने और बिचौलियों की बढ़ती मिका के कारण बाजार में इस वर्ष आम, केला, अंगूर और सेब जैसे फलों की कीमतों भी पिछले वर्ष के इसी सीजन की तुलना में ४५ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई है। इस ारण मौसमी फल भी आम जनता की पहुंच से दूर हो गए हैं। सब्जियों के साथ–साथ लों के दाम भी आसमान छू रहे हैं जिससे आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा पौष्टिक आहार वंचित हो गया है। सभी महानगरों और प्रमुख नगरों में सब्जियों और फलों के दाम आम दमी की पहुंच से दूर हो गए हैं। दाल पहले ही थाली से दूर हो चुकी है। जो भाजपा हंगाई को लेकर मनमोहन सिंह की सरकार के खिलाफ भारत बंद किया करती थी, वह जकल भारत की सरकार चला रही है। इसके बाद भी उन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों कुछ भी नहीं बिगाड़ पा रही है जिनसे राष्ट्रीय परिस्थितियों में महंगाई को बल मिलता फर्क सिर्फ इतना आया है कि जो बातें मनमोहन सिंह बोला करते थे, वही बातें आज दी सरकार भी कहने लगी है। सरकारें बदली, बस भाषा बदल गयी लेकिन आम आदमी कोई राहत नहीं मिली। वह पहले भी महंगाई से जूझ रहा था। समय के साथ बोझ र बढ़ा दिया गया। वर्ष २०११ में प्रणब मुखर्जी ने कहा था कि महंगाई दूर करने के ए सरकार के पास कोई जादू की छड़ी नहीं जिसे घुमाते ही महंगाई छू–मंतर हो ए। साल २०१४ के जून में इस जादू की छड़ी का नाम इलेक्ट्रॉनिक स्विच हो गया। असल इस महंगाई के पीछे असली खेल जमाखोरों का होता है। सच बात तो यह के भारत की अर्थव्यवस्था इन सटोरियों, बिचौलियों और जमाखोरों के हाथों में ही ती है। अपना खून–पसीना एक करके उत्पादन करने वाले किसानों की जिंदगी के बोझ तले दबकर खत्म हो जाती है। खुदरा बाजार में खाद्य पदार्थों के दाम कितना ही क्यों न बढ़ जाएं, किसान वर्ग को इसका फायदा कतई नहीं मिलता। गाई हमेशा गंभीर राजनीतिक और सामाजिक विघटन से जुड़ी घटना का प्रतिफल है। हाल के कुछ वर्षों के दौरान देश का किसान और अधिक गरीब हुआ है जबकि के द्वारा उत्पादित खाद्य पदार्थों के दामों में भारी इजाफा दर्ज किया गया। यह समूचा फा अमीरों की जेबों में चला जाता है। देश के अमीरों की अमीरी ने अद्भुत तेजी ाथ छलांगें लगाई हैं। मंत्रियों और प्रशासकों के वेतन में जबरदस्त वृद्धि हो गई। ी ओर साधारण किसानों में गरीबी का आलम है। आम आदमी की रोटी–दाल ानों ने नहीं, वरन बड़ी तिजोरियों के मालिकों ने दूभर कर दी है। महंगाई वास्तव ाकतवर अमीरों द्वारा गरीबों को लूटने का एक अस्त्र है। इस खतरनाक साजिश रकारें भी अमीरों के साथ शामिल हैं। वास्तव में सरकार ने बाजार की ताकतों को प्रश्रय और समर्थन दे दिया है कि घरेलू बाजार व्यवस्था सरकारी नियंत्रण से बाहर र बेकाबू हो चुकी है। सटोरिए, दलाल और बिचौलिए इसमें सबसे अहम किरदार ए हैं। जब तक ये किरदार सरकार पर हावी रहेंगे, महंगाई डायन अपने पांव ऐसे ारती रहेगी। आम जनता उसके बोझ के तले दबती रहेगी।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

उसी डाल को काटने लगे आप

केजरीवाल के झूठ को जनता तक पहुंचाने में मीडिया का बड़ा योगदान रहा है। मीडिया को भी लगा कि देश में एक नई राजनीतिक इबारत लिखी जाने की तैयारी हो रही है। लोगों को एक नया विकल्प मिल सकेगा। राजनीति के इस पौधे के अंकुरण पर मीडिया ने पूरा ध्यान दिया। जनता तक अरविंद केजरीवाल की बातों को जोर–शोर से पहुंचाया। लेकिन अब आम आदमी पार्टी जिस डाल पर बैठी है, उसी को काटने पर लगी है। आप को अब मीडिया बुरी लगने लगी है। सत्ता में आने के बाद से ही केजरीवाल मीडिया पर लगातार आरोप लगा रहे हैं। वह चाहते हैं, वह कुछ भी करें। लेकिन वह अब जनता तक न पहुंचने पाये। यानि की उनकी पोल न खुले। इसी के तहत दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने अपने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया है कि सरकार या मुख्यमंत्री की छवि खराब करने वाली खबरों पर वह प्रिंसिपल सेक्रेटरी होम के पास शिकायत दर्ज कराएं। प्रिंसिपल सेक्रेटरी होम मामले की जांच करेंगे और निदेशक अभियोजन से राय मांगेंगे कि क्या भारतीय दंड संहिता आईपीसी की धाराओं के तहत अभियोजन शुरू किया जा सकता है। निदेशक अभियोजन की राय के मुताबिक प्रिंसिपल सेक्रेटरी इस मामले को विधि विभाग के पास जांच के लिए भेजेंगे और सीआरपीसी की धारा १९६–४ के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कराने की स्वीकृति ली जाएगी। सर्कुलर में यहां तक कहा गया है कि आरोप साबित होने पर खबर प्रकाशित या प्रसारित करने वाले मीडिया संस्थान के खिलाफ कार्रवाई भी की जाएगी। वाकई यह सर्कुलर चौंका गया क्योंकि शायद ही किसी ने कल्पना की होगी कि कभी आरटीआई कार्यकर्ता रहे केजरीवाल की सरकार मीडिया सेंसरशिप पर उतर आयेगी। मीडिया सही खबर दे, निष्पक्षता के साथ खबर दे, आत्मनियमन का पालन करे। यहां तक तो ठीक है लेकिन मीडिया नेताओं को चुभने वाली या उन पर लग रहे आरोपों से संबंधित खबर भी ना दे, यह कैसे हो सकता है। आम आदमी पार्टी को जो भी सफलता हासिल हुई है उसमें मीडिया की भी एक बड़ी भूमिका मानी जाती है क्योंकि आम आदमी पार्टी ने जिन मुद्दों को उठाया और जन जागरण चलाया उसको मीडिया ने पूरी तवज्जो दी। लेकिन इस वर्ष जब आम आदमी पार्टी की दोबारा सरकार बनी तो सबसे पहले सचिवालय में मीडिया के प्रवेश पर ही कथित रूप से प्रतिबंध लगाया गया। मीडिया ने जब हंगामा किया तो कहा गया कि ऐसी कोई बात नहीं है। आम आदमी पार्टी के नेताओं के जब कथित स्टिंग सामने आने लगे तो पार्टी प्रवक्ताओं का मीडिया पर भड़कना भी सबको हतप्रभ कर गया। राज्य सरकार का आरोप है कि उसकी छवि खराब करने के उद्देश्य से मीडिया में एक अभियान चलाया जा रहा है। पार्टी का यह भी आरोप है कि केंद्र सरकार उसके साथ पूरा सहयोग नहीं कर रही है ताकि आम आदमी पार्टी सरकार अपने वादों को पूरा नहीं कर सके। सच क्या है वह तो यह राजनीतिक दल ही जानें लेकिन जो दिखायी दे रहा है वह यह है कि एक दूसरे पर आरोप मढ़कर समय बिताते रहने की पहले वाली राजनीति ही जारी है और सिस्टम में कोई बदलाव आया नहीं है। मीडिया पर नजर रखने के लिए दिल्ली सरकार की ओर से पहले भी अधिकारियों को कथित निर्देश दिये गये थे। अभी हाल ही में सरकार ने अधिकारियों से कहा है कि मीडिया की विषय वस्तु की निगरानी करें। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी पूरे मीडिया को विपश्यना करने की जरूरत बता चुके हैं। वैसे भी मीडिया को कोसना आजकल चलन–सा बन गया है। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के सत्ता से बाहर होने का एक बड़ा कारण मीडिया को बताया गया। कहा गया कि मीडिया ने सरकार की छवि खराब की और कथित घोटालों की खबरों को ज्यादा तवज्जो दी जिससे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को लाभ मिला। यह भी कहा गया कि मीडिया भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के पक्ष में है। लेकिन अब जब मोदी सरकार का एक साल पूरा होने का है, यही मीडिया सरकार की कथित नाकामियों को बड़ी संजीदगी से उजागर करने में लगा हुआ है। दरअसल मीडिया को जरिया बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना और फिर उसी पर आरोप मढ़ देना राजनेताओं और राजनीतिक दलों की आदतों में शुमार है। मनमोहन सरकार की यदि छवि खराब हो रही थी तो उसके लिए मीडिया नहीं सरकार की कार्यप्रणाली दोषी थी इसी प्रकार यदि मोदी सरकार की आलोचना हो रही है तो इसके पीछे मीडिया की कोई योजना नहीं बल्कि जमीनी हकीकत को सामने लाने का प्रयास है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

Thearyasamaj.org

गुणकारी टमाटर

शशि भूषण शलभ

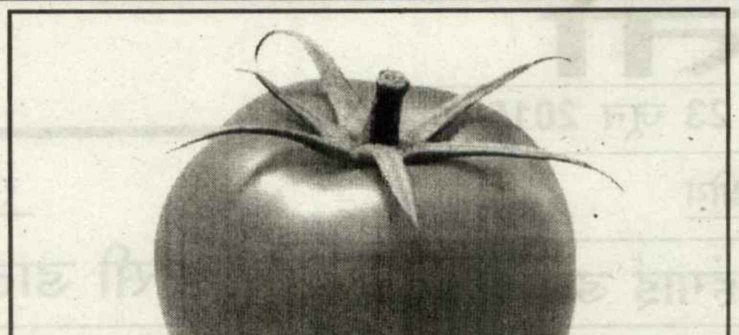

वैज्ञानिक परीक्षणों ने टमाटर को सब से अधिक गुणकारी प्रमाणित किया है। पहले टमाटर का केवल सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता था, अब फल की तरह भी उपयोग है १०० ग्राम टमाटर में ३–६ ग्राम कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन ०.०६ ग्राम और वसा ०.२ ग्राम मात्रा में होती है तथा शरीर को २० कैलारी ऊर्जा मिलती है।

रासायनिक गुणः- इसमें 'ए', 'बी', और 'सी' विटामिन संतरे और अंगूर से अधिक मात्रा में होते हैं। सोडियम, पोटेशियम, कैल्शियम और फॉस्फोरस तत्त्व भी विशेषरूप से होते हैं। इसमें से लौह तत्त्व अधिक मात्रा होते हैं। अण्डे की सफेदी से ५ गुना सेब, अंगूर, खरबूजे, संतरे और नाशपाती से अधिक लौह तत्त्व होता है। विटामिन 'ए' दीर्घ आयु तक स्त्री–पुरूषों में सौदर्य की वृद्धि करता है। चिकित्सक विशेष विटामिन 'ई' को पौरूष शक्तिवर्द्धक विटामिन मानते हैं विटामिन 'बी' शरीर में मलावरोध को नष्ट करने में सहायक करता है। आँतों में मल एकत्र नही हो पाता इस के छिलकों में विशेषरूप में विटामिन 'ए' पाया जाता है। यह नेत्र ज्योति विकसित करता है। इसमें एंटी ऑक्सीडैंट तत्त्व अधिक मात्रा में होते हैं। इससे शरीर में शक्ति और स्फूर्ति विकसित होती है। कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होने के कारण मधुमेह रोग से पीडित स्त्री–पुरूष के लिए बहुत गुणकारी है। इसमें जल की मात्रा ६४.३ प्रतिशत होती है। ग्रीष्म ऋतु में सेवन करने से प्यास कम लगती है। विटामिन ए व सी स्कर्वी रोग से सुरक्षित रखता है गर्भावस्था में स्त्रियाँ को कैल्शियम की बहुत आवश्यकता होती है। गर्भस्थ शिशु के दांतों और अस्थियों का विकास भी कैल्शियम से होता है। शिशु के दाँतों का निर्माण गर्भावस्था में तीसरे महीने से शुरू हो जाता है गर्भावस्था में स्त्रियों को टमाटर खिलाने से लौह व कैल्शियम भरपूर मात्रा में मिलाते हैं।

आयुर्वेदानुसार टमाटर के गुणः टमाटर मधुराम्ल, रक्त शोधक, रक्तवर्द्धक, शीतवीर्य, रूचिकर होने के कारण दीपन–पाचन होते हैं। इसके सेवन से पाचन क्रिया सरलता से होती है। हृदय की निर्मबता नष्ट होती है। और स्नायुओं को शक्ति मिलती हैं

अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि टमाटर में कुछ गुणकारी तत्त्व होते हैं, जो पुरःस्थ ग्रंथि (प्रोस्टेट ग्लैंड) के कैंसर से सुरक्षित रखते हैं। अमेरिका के हारवर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ में अनुसंधान के अनुसार, जब टमाटर को आग पर पकाया जाता है, तो इसकी कोशिकाएँ (सेल) विभक्त होकर अधिक मात्रा में लाइकोपीन की उत्पत्ति करते हैं। ४० से ६० वर्ष की आयु के पुरूष पुरःस्थ ग्रंथि के कैंसर से मुक्त रह सकते हैं। इसके सूप में विद्यमान लाइकोपीन और कैरोटीन एंटी–ऑक्सीडेंट तत्त्व कैंसर कोशिकाओं को फैलने से रोकते हैं। स्त्रियों में स्तन व गर्भाशय के कैंसर से सुरक्षा होती है। पुरूष गले, मुँह और फेफड़ों के कैंसर से सुरक्षित रहते हैं।

इसका सूप धूम्रपान करने वालों की तम्बाकू के विषैले धुएँ से सुरक्षा करता है। इसमें विद्यमान क्लोरोजेनिक और काओमेरिक अम्ल सिगरेट के विषैले धुएँ में पाए जाने वाले कारसीनोजेन्स जैसे विषाक्त तत्त्वों को नष्ट करके, शरीर की सुरक्षा करते हैं।

लाभः मधुमेह रोग (डायबिटीज) से पीड़ित स्त्री–पुरूषों के चने के आटे की रोटी के साथ टमाटर की सब्जी व सलाद खाने से शर्करा का प्रकोप नियंत्रण में रहता है। शारीरिक रूप से निर्बल रहने वाली नवयुवतियों को प्रतिदिन १०० ग्राम टमाटर के रस में १० ग्राम मधु मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से निर्बलता नष्ट होती है। शरीर में रक्त की वृद्धि होती है और चेहरे पर लालिमा आती है।

हृदय निर्बल होने पर काम करने से हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। शरीर पसीने से भीग जाता है। ऐसी स्थिति में दो–तीन टमाटर का रस निकालकर उसमें अर्जुन की छाल का ५ ग्राम चूर्ण मिलाकर सेवन करने से हृदय रोगों से सुरक्षा होती है।

सलाद के सेवन से अम्ल पित्त (ऐसिडिटी) की विकृति का निवारण होता है। साइट्रिक और फोलिक अम्ल की अधिक मात्रा होने से शरीर में एंटी एसिड का कार्य करके अम्ल पित्त की विकृति को नष्ट करता है।

टमाटर में पाया जाने वाला 'बायो–फलावोनॉयड' और 'कैरोटीनॉयड' वातरक्त रोग नष्ट करते हैं कमर दर्द का भी निवारण होता है।

इसमें मौजूद लाइकोपीन के कारण सूरज के प्रचंड अल्ट्रा वॉयलेट किरणों से सुरक्षा होती है। जल की अधिकता के कारण ग्रीष्म ऋतु में सेवन करने से त्वचा का उष्णता का प्रभाव कम पड़ता है। सलाद खाने से या सूप का सेवन करने से वजन नहीं बढ़ता। इसमें कैलोरी ऊर्जा कम होती है। सूप शरीर में एकत्र वसा को नष्ट करके मोटापे के प्रकोप को कम करता है।

इनमें रेशों (फाइबर) की मात्रा अधिक होती है। रेशों के कारण आँतों में मल एकत्र नहीं होता है। प्रतिदिन शौच समय पर होती है स्थूलता और मलावरोध से सुरक्षित रहते हैं।

टमाटर का ५० ग्राम जल में मिलाकर दिन में दो बार कुल्ले करने से मुँह में छाले नष्ट करकें, मुँह में छालों से मुक्त करता है। इसमें सौंठ का चूर्ण और सेंधानमक मिलाकर सेवन करने से मंदाग्नि की विकृति नष्ट होती है। पाचन शक्ति प्रबल होती है।

भोजन के प्रति अरूचि होने पर टमाटर के ५० ग्राम रस में अदरक और नींबू का रस तथा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से अरूचि नष्ट होती है। खुलकर भूख लगती है।

अर्शरोग (बवासीर) होने पर रोगी के मस्सों में शोथ होने पर बहुत पीड़ा होती है अर्शरोग से छुटकारा पाने के लिए टमाटर के १०० ग्राम रस में जीरा भूनकर और सेंधा नमक मिलाकर दिन में दो बार सेवन से मलावरोध (कब्ज) नष्ट होकर अर्शरोग नष्ट होता है।

बच्चों के पेट में कीड़े होने पर उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। सुबह–सुबह टमाटर के छोटे–छोटे टुकड़े करके, उन पर कालीमिर्च व सेंधा नमक मिलाकर खिलाने से पेट के कीड़े नष्ट होते हैं। वायुविडंग का चूर्ण छिड़ककर सेवन करने से कीड़े शीघ्र नष्ट होते हैं।

प्रतिदिन टमाटर खाने से या उसका रस सेवन करने से चेहरे पर लाली आती है। टमाटर का रस चेहरे पर मलने से त्वचा कोमल और स्निग्ध होती है। त्वचा का सौंदर्य विकसित होता है।

ग्रीष्म ऋतु में घर से बाहर निकलने पर चेहरे और गर्दन की त्वचा झुलसकर काली हो जाती है। आँखों के नीचे भी काले निशान बन जाते हैं। ऐसे में बादाम की गिरी जल में डालकर रखें। फिर उनके छिलके उतारकर टमाटर के रस के साथ पीसकर लेप बनाएँ। इस लेप को चेहरे, गर्दन और कंधों पर मलने से त्वचा का सौंदर्य निखरता है।

वास्तुदोष एवं समस्याओं का कारण

१. दक्षिण–पश्चिम (नेत्रृत्य कोण) पश्चिम दिशा प्रवेश द्वार शटर द्वार वाले कमरे के ठीक नीचे तल घर जिससे वैवाहिक सुख समाप्त कोर्ट कचहरी के मामले गुप्तांग एंव जननांग संबंधी बीमारियां

२. पूर्वी भाग में दोष–कबाड़ ऊंचाई होने के कारण पूजा पाठ, धर्म आध्यात्म में गिरावट, यश प्रतिष्ठा एवं संतान सुख में कमी, व्यर्थ का खर्च अशांति, सिर दर्द, नेत्र विकार, हड्डी टूटने (ऐक्सीडेंट) होने की सम्भावना रहती है।

३. पूर्व–ईशान से उत्तर दिशा सभी कमरे केवल कचरा और कबाड़ से अटा होने और भारी सामान होने के कारण भौतिक सुखों में कमी, चर्म रोग, हृदय रोग, गाल बलाडर की बीमारी, पागलपन खून एवं हार्निया संबंधी बीमारी।

४. किचिन रूम एवं पूजा स्थान लगभग मध्य स्थान के पास ब्रम्ह स्थान को क्षमिग्रस्त कर रहा है ज बाहर की तरफ निकली है ईंटों से बनी अलमारी पूजा घर पर सामानों का ढेर अस्वच्छ एवं अस व्यस्त रख रखाव जो कि पारिवारिक ग्रह केश ईश्वरीय कृपा दृष्टि समाप्त (पूजा केवल नाटकीय होती है।

उपरोक्त समस्त वास्तु दोषों से निजात पाने के लिये दिया गया परामर्श

१. उत्तर पूर्व ईशान कोण में बने कमरे में कबाड़ हटाकर, पूर्व की और खिड़की का निर्माण एंव पूज घर का निर्माण करें।

२. आग्नेय कोण में बनी लेट्रिन को पूरी तरह समाप्त कर वहां किचिन रूम बनाना बताया।

३. पूरे मकान की ढलान एंव पानी निकासी उत्तर–पूर्व की तरफ करने को कहा गया।

४. पश्चिम में प्रवेश द्वार की तरफ बना तल घर को पूरी तरह भरने को कहा, और दक्षिण पश्चि की ऊंचाई बढ़ाने को कहा, इस मकान को अन्य अनेकों प्रकार के वास्तुदोष पाये गये जो ए साथ सब सुधार पाना बहुत मुश्किल दिखा, वहां उनकी श्रीमती जी सदी बीमार, भाई से न्यायि विवाद एंव सुपुत्री की वैवाहिक अनबन का विवाद जीवन अकथनीय उलझाव पूर्ण लेकिन य मार्गदर्शन का पालन एंव भविष्य में नियमित जिज्ञासा रखकर सुधार में रूचि रखें तो वास्तु दो मुक्त होकर मंगलमय जीवन की उपेक्षा की सकती है।

hearyasamaj.org

अग्नि अवतार श्री वल्लभाचार्य

भक्तिकालीन सगुणधारा कृष्णभक्ति शाखा के आधारस्तंभ वं पुष्टिमार्ग के प्रणेता वल्लभाचार्य जी का प्रादुर्भाव सन १४७८, वैशाख कृष्ण कादशी को दक्षिण भारत के ांकरवाड ग्रामवासी तैलंग ब्राह्मण ीलक्ष्मणभट्ट जी की पत्नी लम्मागारू के गर्भ से काशी के मीप हुआ। उन्हें 'वैश्वानरावतार ग्नि का अवतार' कहा गया है। वेद शास्त्र में पारंगत थे। श्री द्रसंप्रदाय के श्रीविल्वमंगलाचार्य ी द्वारा इन्हें 'अष्टादशाक्षर गोपाल न्त्र' की दीक्षा दी गई। त्रिदंड न्यास की दीक्षा स्वामी नारायणेन्द्र ीर्थ से प्राप्त हुई। विवाह पंडित ीदेवभट्ट की कन्या महालक्ष्मी से आ और यथासमय दो पुत्र हुए– ीगोपीनाथ व श्रीविट्ठलनाथ। नकी मृत्यु १५३१ में हुई।

श्री वल्लभाचार्य जी के र्वज आंध्र राज्य में गोदावरी टवर्ती कांकरवाड़ नामक स्थान निवासी थे। वे भारद्धाज ात्रीय तैलंग ब्राह्मण थे उनके ता रीलक्ष्मण भट्ट दीक्षित विद्वान ौर धार्मिक महापुरुष थे। उनका िवाह विद्यानगर (विजयनगर) के नपुरोहित, सुशर्मा की गुणवती न्या इलम्मागारू के साथ हुआ ा जिससे रामकृष्ण नामक पुत्र ौर सरस्वती एवं सुभद्रा नाम की ा कन्याओं की उत्पत्ति हुई थी।

श्रीलक्ष्मण भट्ट अपने गी–साथियों के साथ यात्रा के ष्टों को सहन करते हुए जब र्तमान मध्य प्रदेश में रायपुर जिले चंपारण्य नामक वन में होकर ा रहे थे, तब उनकी पत्नी को अकस्मात प्रसव–पीड़ा होने लगी। सायंकाल का समय था। सब लोग पास के चौड़ा नगर में रात्रि को विश्राम करना चाहते थे, किन्तु इलम्मा जी वहाँ तक पहुँचने में भी असमर्थ थीं। निदान लक्ष्मण भट्ट अपनी पत्नी सहित उस निर्जन वन में रह गये और उनके साथी आगे बढ़ कर चौड़ा नगर में पहुँच गये। उसी रात्रि को इलम्मागारू ने उस निर्जन वन के एक विशाल शमी वृक्ष के नीचे अठमासे शिशु को जन्म दिया।

बालक पैदा होते ही निष्चेष्ट और संज्ञाहीन सा ज्ञात हुआ, इसलिए इलम्मागारू ने अपने पति को सूचित किया कि मृत बालक उत्पन्न हुआ है। रात्रि के अंधकार में लक्ष्मण भट्ट भी शिशु की ठीक तरह से परीक्षा नहीं कर सके। उन्होंने दैवेच्छा पर संतोष मानते हुए बालक को वस्त्र में लपेट कर शमी वृक्ष के नीचे एक गड्ढे में रख दिया और उसे सूखे पत्तों से ढक दिया। तदुपरांत उसे वहीं छोड़ कर आप अपनी पत्नी सहित चौड़ा नगर में जाकर रात्रि में विश्राम करने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल आगत यात्रियों ने बतलाया कि काशी पर यवनों की चढ़ाई का संकट दूर हो गया। उस समाचार को सुनकर उनके कुछ साथी काशी वापिस जाने का विचार करने लगे और शेष दक्षिण की ओर जाने लगे। लक्ष्मण भट्ट काशी जाने वाले दल के साथ हो लिये। जब वे गत रात्रि के स्थान पर पहुंचे, तो वहाँ पर उन्होंने अपने पुत्र को जीवित अवस्था में पाया।

ऐसा कहा जाता है कि उस गड्ढे के चहुँ ओर प्रज्जवलित अग्नि का एक मंडल सा बना हुआ था और उसके बीच में वह नवजात बालक खेल रहा था। उस अद्भुत दृश्य को देख कर दम्पत्ति को बड़ा आश्चर्य और हर्ष हुआ। इलम्मा जी ने तत्काल शिशु को अपनी गोद में उठा लिया और स्नेह से स्तनपान कराया। उसी निर्जन वन में बालक के जातकर्म और नामकरण के संसकार किये गये। बालक का नाक 'वल्लभ' रख गया, जो बड़ा होने पर सुप्रसिद्ध महाप्रभु वल्लभाचार्य हुआ। उन्हें अग्निकुण्ड से उत्पन्न और भगवान की मुखाग्नि स्वरूप 'वैश्वानर का अवतार' माना जाता है। वल्लभाचार्य जी का आरंभिक जीवन काशी में व्यतीत हुआ था, जहाँ उनकी शिक्षा–दीक्षा तथा उनके अध्ययनादि की समुचित व्यवस्था की गई थी। उनके पिता श्रीलक्ष्मण भट्ट ने उन्हें गोपाल मन्त्र की दीक्षा दी थी और श्रीमाधवेन्द्र पुरी के अतिरिक्त सर्वश्री विष्णुचित तिरुमल और गुरुनारायण दीक्षित के नाम भी मिलते हैं। वे आरंभ से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि ओर अद्भुत प्रतिभाशाली थे। उन्होंने छोटी आयु में ही वेद, वेदांग, दर्शन, पुराण, काव्यादि में तथा विविध धार्मिक ग्रंथों में अभूतपूर्व निपुणता प्राप्त की थी। वे वैष्णव धर्म के अतिरिक्त जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, शांकर आदि धर्म–संप्रदायों के अद्वितीय विद्वान थे। उन्होंने अपने ज्ञान और पांडित्य के कारण काशी के विद्वत समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त किया था।

श्री वल्लभाचार्य जी और भक्त

एक बार एक भक्त ने श्रीबल्लभाचार्यजी से अनुरोध पूर्वक कहा– 'प्रभो! मैं सौ ब्राह्मणों को भोजन कराने की इच्छा रखता हूं।' श्री आचार्य ने उनसे कहा– 'यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो एक वैष्णव को भोजन दो, वही फल प्राप्त होगा।' भक्त ने पुनः कहा–'यदि मैं सौ वैष्णव को जिमाना चाहूं तो? श्रीमहाप्रभु ने कहा–'एक अनुरागी भक्त को पवा दो। वही फल प्राप्त होगा।' भक्त ने कहा–'यदि मैं सौ अनुरागियों को पवादूं तो? यह सुनकर श्रीआचार्य के आंखों में अश्रु आ गए और वे भावविह्वल होकर बोले– 'भैया! सौ अनुरागी मिलेंगे ही नहीं? उन्होंने उस भक्त को माता पार्वती जी का वो प्रसंग सुनाया जिसमें उन्होंने महर्षि अगस्त्य को जिमाया था और जब उन्हें भरपेट भोजन कराना स्वयं माता अन्नपूर्णा को भारी पड़ गया तो उन्होंने स्वयं नारायण का आह्वान किया कि वे ही उन्हें भावी संकट से उबार सकते हैं और हुआ भी ठीक वैसा ही। क्योंकि संत से वैष्णव तक की सीढ़ी तक चढ़ते –चढ़ते भक्त अपना हिम्मत हारने लग जाता है और वे गोविंद से अपने शरण में लेने की प्रार्थना करने लग जाता है। क्योंकि भक्ति का मार्ग कोई आसान मार्ग नहीं है। इस मार्ग पर चलने के लिए निष्कपट, निष्कलुष और निर्विकार भाव से चलना पडता है। इसलिए भगवन्नभक्ति और अपनी मुक्ति के लिए सबसे पहले भगवान के भक्तों में अनुराग होना चाहिए जो कि उन्हें भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने को प्रेरित करता रहेगा। और रही जहां तक भक्त और अनुरागी की बात तो सच्चे भक्तों को मिलना जितना कठिन है उसे कई गुणा कठिन है एक अनुरागी का मिलना। अगस्त्यजी अनुरागी थे जबकि उनके काल के अन्य ऋषिगण उनकी स्थिति तक नहीं पहुंच सके थे। दूसरी बात कि वे माता जगजननी के अनन्य भक्त भी थे और उनके उसी अनुरागपूर्ण भक्ति के लिए मां ने स्वयं अपने हाथों से अपने भक्त को जिमाने का निश्चय किया था। पर उन्हें क्या मालूम कि महादेव भी उनके साथ खेल खेलेंगे और अपने इष्ट को जिमवा कर ही संतुष्ट होंगे। जैसा कि हुआ।

सर्वोच्च न्यायालय को चिन्ता कि भारत कब तक सेकुलर रह पायेगा

देश की सबसे बड़ी अदालत चिन्तित है। चिन्ता इस बात की कि भारत कब तक पंथ निरपेक्ष देश का रह पायेगा? यह समस्या ालिये है कि दिनों दिन सेकुलरवाद के नाम पर मजहब का दखल ायिक–प्रक्रिया और नागरिक कानूनों में बढ़ता जा रहा है। इसलिये यमूर्ति विक्रमजीत सेन ने कहा है कि देश में जल्द से जल्द समान ारिक कानून बनने चाहिये। उच्चतम न्यायालय ने यह भी कहा कि से अधिक विवाह करना इस्लाम–मजहब का हिस्सा नहीं है। यालय का कहना है कि तलाक, विवाह, गोद लेना जैसे नागरिक, ालों में मजहबी सिद्धान्तों का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। मामला र प्रदेश का है। राज्य सरकार के कृषि विभाग के कर्मचारी खुर्शीद नम खान ने पहली पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह कर लिया। पहली ो सबीना खान ने इसकी शिकायत की। दूसरे विवाह की बात सिद्ध पर खुर्शीद को सरकारी नौकरी से निकाल दिया गया। खुर्शीद खान लाहाबाद उच्च न्यायालय में याचिका लगाई जो रदद् हो गई उच्च यालय में हराने के बाद सर्वोच्च न्यायालय में मामला आया। बीती ६ ारी को सबसे बड़े न्यायालय ने खुर्शीद आलम को नौकरी से हटाने सही ठहराया। इसी मामले के साथ एक संगठन ने ईसाई कानूनों के ी ईसाई न्यायालय बनाने की अनुमति न्यायालय से माँगी। इस उच्चतम न्यायालय ने रद्द कर दिया।

राजगुरु की कुण्डलियाँ

रेल तब और अब

छुक–छुक अब करती नहीं, रेल करे सट–सांय।
कू की सीटी शांत है, अब भोंगा भौं भांय।।
अब भोंगा भौं भांय, रव रहित आना जाना।
अब बच्चों के लिए, चलो लिखिए नव–गाना।।
गाया समय ''राजगुरु'', पुराना कुक–कुक, रुक–रुक।
अब सपनों की बात, हो गई भुक–भुक, छुक–छुक।।

कहाँ गये?

गोरैया आंगन नहीं, गायब कोयल पेड़।
होकर उन्नतिशील जन, सबको दिया खदेड़।।
सबको दिया खदेड़, खड़े कर अटा–अटारी।
तरस रहे अब मिले, कहाँ पर शुद्ध बयारी।।
कहाँ गये सर सरक, कहाँ बरगद की छैया।।
ताक रहे ''राजगुरु'', टकटकी कित गौरैया।।

आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर

Thearyasamaj.org

सभी भारतीयों की धमनियों में आज भी हिन्दू खून है!

डॉ० सुब्रह्यण्यम स्वामी की हिन्दू पहचान और हिन्दू विद्वेषियों की मानसिकता पर दो टूक वक्तव्य

✍ हरिकृष्ण निगम

सभी भारतीय चाहे आनुवांशिकी, जीव विज्ञान एवं सामान्य डी. एन. ए. के वैज्ञानिक आधार हों अथवा ऐतिहासिक व भौगोलिक साक्ष्य हो निस्संदेह हिन्दू कहे जा सकते हैं। भाजपा से जुड़े हावर्ड विश्वविद्यालय से जुड़े और एक समय केन्द्रीय मंत्री रहे डा. सुब्रह्यण्यम स्वामी यह खुलकर कर बार बार दोहरा रहे हैं। जो लोग उनके इन दो टूक वक्तव्य को विवादास्पद मानकर बौखला तो जाते हैं पर तर्क की कसौटी पर उन्हें प्रत्युत्तर देने में असफल व असमर्थ दीखते हैं।

जब से कुछ दिनों पूर्व 'इण्डिया टीवी' नाम का एक अखिल भारतीय लोकप्रिय चैनल के आपकी अदालत कार्यक्रम में डा० सुब्रह्यण्यम स्वामी ने खुलकर कहा कि प्रजाति व जीव विज्ञान व ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार सभी भारतीयों के खून में हिन्दू रक्त बह रहा है, इस पर मीडिया में चलने वाले विमर्श के अनेक हठधर्मी रूप सामने आए। कहीं उनके शब्दों को ध्वनिहीन कर दिया गया, कही पुनःप्रसारण में वायस ओबर द्वारा शब्द बदल दिये गये या मात्र उनके होठों को चलते दिखाया गया। पर इससे क्या मुद्रित मीडिया व उनके प्रकाशित ग्रंथों में जो वे लगातार लिखते आ रहे हैं वह सारा विश्व जानता है। हाल में जब डा. स्वामी ने लखनऊ में एक युवा मंच के भाषण में श्रोताओं को अवगत करते हुए बताया कि हिन्दुओं व मुसलमानों का डी. एन. ए. एक ही है क्योंकि ८०० वर्ष पहले ही सारा भारतीय प्रायद्वीप या उपमहाद्वीप अथवा बृहद भारत पश्चिमी एशिया से छूने वाली सारी सीमाओं में मात्र हिन्दू ही रहते थे इसलिए मुसलमानों को, आस्था के बदलाव के बावजूद, अपने पूर्वजों व उनके अतीत को सम्मान देते हुए अयोध्या, काशी, मथुरा आदि स्थानों में बाद में उनके ध्वंसावशेषों पर बनाई गई मस्जिदों पर अपने दावे छोड़ देना चाहिए। यह सिद्ध हो चुका है कि इन सभी स्थानों पर एक समय मात्र विशाल मंदिर व उनके पवित्र परिसर थे। उनकी अपनी आस्था में स्वयं ऐसे मन्दिरों की नीव पर बने इबादतगाह विश्व भर में 'नाजायज' कहलाए जाते हैं

हो सकता है कि अनवरत दुष्प्रचार व इतिहास के विद्रूपीकरण के कारण भारतीय प्रबंध संस्थान (आई, आई. एम) किंग जार्ज मेडिकल यूनीवर्सिटी, डा० राममनोहर लोहिया लॉ यूनिवर्सिटी और कुछ अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के उपस्थित

विद्यार्थियों को यह पहली बार सुनने को मिला था पर ये बातें उन्हें झकझोर अवश्य कर रही थीं। डा० स्वामी ने यह भी कहा कि पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रूसी आर्थिक मॉडल के प्रेम के कारण देश में प्रगति एकांगी रही थी। चाहे कश्मीर हो या गुटनिरपेक्ष तटस्थता की नीति हो, उसकी आड़ में सेकुलरवाद और धर्म निरपेक्षता की नीतियों ने देश का दशकों तक अहित किया है। हिन्दू पुनरुत्थान के किसी सन्दर्भ की बात उठते ही भारत के वामपंथी एक स्नायुरोगी की तरह हिन्दुओं के विरुद्ध आक्रामक एंव विद्वेष पूर्ण रुख अपना लेते हैं। एक बांधने वाली पहचान की अवधारणा के बिना कोई राष्ट्र लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकता है यही बात थोथे सेकुलरवादी समझ नहीं सके हैं। ८० प्रतिशत हिन्दुओं के इस देश में उनके ही पूर्वजों के इतिहास को छल–छद्म के बल पर और देश की आध्यात्मिक धरोहर पर मर्मान्तक प्रहार होते रहे हैं। हिन्दू संगठनों, प्रतीकों, मौलिक धारणाओं पर बौद्धिक आतंकवाद हावी हो चुका है यदि उपर्युक्त निष्कर्ष एक विद्वतवर्ग में सम्मानित वैश्विक नागरिक दे सकता है तब हर भारतीय को इसे भली भांति समझना होगा। डा० स्वामी की सुप्रसिद्ध कृति ''हिन्दूज अण्डर सीज'' जो उनकी अपनी पत्नी डा० रुकसान स्वामी द्वारा शोध पूर्ण दृष्टि से सम्पादित की गई है उसकी चर्चा मीडिया में होती रहती है। उनके अपने परिवार में मुस्लिम, एक यहूदी और ईसाई भी है जिनकी विश्वसनीयत सर्वविदित है। साइमन, कुजने... और पाल सैम्युअल सन जैसे विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों के साथ डा० स्वामी ने 'इन्डेक्स नम्बर थ्योरी' पर जो कार्य किया है वह अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में भी सराहा जाता रहा है। उन्हें हिन्दू पक्ष को प्रस्तुत करने के लिए व भारत में जनसांख्यिक बदलावों के भावी खतरों पर दुनियाँ का ध्यान आकर्षित करने के लि 'वन मैन आर्मी' की भी संज्ञा दी जा चुकी है।

देश का नवाँ राज्य-कर्नाटक

१. पहले इसका नाम मैसूर था। ०१–११–१९७३ से इसक नया नाम कर्नाटक रखा गया है।

२. राजधानी का नाम बंगलौर था। कुछ माह पूर्व बंगलौर तथा ११ अन्य नगरों के नए नाम कन्नड़ भाषा के आधार पर बदले गए हैं। बंगलौर का नया नाम बंगलूरु हो गया है।

३. बंगलूरु इलैक्ट्रोनिक सिटी कहलाता है क्योंकि बिजली २४ घण्टे आती है। यहां की बनी वस्तुएँ उत्तम क्वालिटी की होती हैं।

४. सरकारी भाषा कन्नड़ है लेकिन राज्य में हिन्दी का विरोध नहीं है। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बंगलूरु से हिन्दी प्रचार वाणी नाम की मासिक पत्रिका ३५ वर्षों से निकाल कर हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रही है।

५. मैसूर का दशहरा प्रसिद्ध है। दशहरे का पर्व धूमधाम से प्रति वर्ष मनाया जाता है।

६. कर्नाटक की सीमाएं केरल–तमिलनाडु–आन्ध्र प्रदेश–तेलंगाना–गोवा तथा महाराष्ट्र से मिलती हैं।

७. कर्नाटक ने प्रयास किया था कि गोवा कर्नाटक में विलीन हो जाए चूंकि गोवा की सरकारी भाषा कोंकडी है इसलिए बहुमत से निश्चय हुआ कि गोवा अलग राज्य ही रहेगा।

८. १९५१ में नेहरू द्वारा बनाए ''द हिन्दू रिलीजियस एण्ड चैरिटेबल एंडोमैन्ट ऐक्ट'' के द्वारा राज्य सरकारों को अधिकार दिया गया कि वे मंदिरों तथा सम्पत्तियों का अधिग्रहण कर सकती हैं। इस अधिकार से राज्य के दो लाख मंदिरों पर राज्य सरकार का कब्जा हो गया। पचास हजार मंदिर धनाभाव के कारण बन्द हो सकते हैं। अन्य मंदिरों की आय सरकारी कोष में जमा हो जाती है।

९. भाजपा तथा संघ परिवार के अन्य संगठन समय समय पर आरोप लगाते रहते हैं कि मंदिरों की आय मुस्लिमों तथा ईसाइयों के कल्याण पर भी खर्च कर दी जाती है।

१०. उपरोक्त ऐक्ट में प्रावधान है कि आय का उपयोग राज्य की सरकार अपनी इच्छा से कर सकती है।

११. राज्य में भाजपा की सरकार ७ वर्षों तक रही। उसने एक भी मन्दिर हिन्दुओं को नहीं लौटाया।

१२. उसने यह एक्ट भी नहीं बनवाया कि मंदिरों की आय मंदिर कोष में ही जमा होगी और हिन्दुओं के कल्याण पर ही व्यय की जाएगी।

१३. यदि ऐसा ऐक्ट बनवाना सम्भव नहीं था तो विधानसभा में प्रस्ताव पारित करके केन्दीय सरकार से अनुरोध तो किया जा सकता था। उसने यह कार्य भी नहीं किया।

१४. राज्य में तीन मुख्य पार्टियां हैं–कांग्रेस–जनता दल (एस) तथा भाजपा।

१५. दक्षिणी भारत में कर्नाटक पहला राज्य हैं जहां भाजपा पूर्ण बहुमत से सत्ता में तो आई लेकिन उसके कार्य कांग्रेस तथा जनता (एस) जैसे ही थे।

शेष पृष्ठ 10 पर

आम हिन्दुस्तानी

साहब का टिपटॉप कुत्ता
बोला गली के लावारिस कुत्ते से
''मुझे देख फिर खुद को देख
कितना फर्क है तुममें और मुझमें
ए ग्रेड का अफसर हूँ मैं
और तुम किसी क्लर्क चपरासी की तरह
मुझे दूध मिलता है
स्वादिष्ट मांस मिलता है
साहब का नौकर मुझे नहलाता है,
टहलाता है
और तुम तुम्हारी औकात
आम हिन्दुस्तान की तरह हो गई है

देवेन्द्र कमा...

thearyasamaj.org

जम्मू कश्मीर में नया प्रयोग कई प्रश्नों के उत्तर दे सकता है

✍ डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

जम्मू-कश्मीर में न्ततः पीडीपी और भाजपा ने लकर सरकार बना ली। पिछले महीने से नये प्रयोग को लेकर ीनों दलों में आपस में चार–विमर्श चल रहा था। देश नहीं विदेशों की भी इस प्रयोग शुरु हो पाने या न हो पाने की भावनाओं पर बहुत कुछ कहा ौर लिखा जा रहा था। वैसे तो हा जा सकता है कि यह प्रयोग ९४७ से ही प्रारम्भ हो गया था। किन देश के प्रथम प्रधानमंत्री डित जवाहर लाल नेहरु ने इसे लस तरीके से निष्पादित किया, ससे इस प्रयोग से राज्य का कसान ज्यादा हुआ और इस योग की असफलता घोषित कर गई। नेहरु के समय ही सरदार टेल और डॉ. श्यामा प्रसाद खर्जी इसी प्रयोग को अलग रीके से करना चाहते थे। नेहरु पटेल को तो उस समय इस योग में दखलअंदाजी करने से ख्ती से मना कर दिया था, किन डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी र नेहरु का कोई दबाव नहीं था योंकि उन्होंने इसे करने से पहले नके मंत्रिमंडल से त्याग–पत्र दे ा था। लेकिन आखिर यह ग क्या है, जिसे लेकर २०१५ भी एक बार फिर दुनिया भर ो आँखें लगी हुई हैं?

दरअसल १९४७ में म्मू–कश्मीर रियासत के शासक हाराजा हरिसिंह ने पाकिस्तान शामिल होने के लिये जिन्ना व र्ड माऊंटबेटन के तमाम प्रत्यक्ष ं परोक्ष दबावों को ठुकराते हुये, श की नई संघीय सांविधानिक वस्था में शामिल होने का निर्णय या था। लेकिन पंडित नेहरु, हाराजा हरि सिंह के व्यक्तिगत र पर इतने विरोधी थे कि वे का श्रेय हरिसिंह को देने के ये किसी भी तरह तैयार नहीं उन्होंने इसका सारा श्रेय, ासत के पांच विभिन्न संभागों से एक, कश्मीर की नेशनल फ्रेंस पार्टी के अध्यक्ष शेख म्मद अब्दुल्ला को दिया। राजा हरिसिंह के प्रति उनका क्तिगत विरोध इतना ज्यादा था उनसे किये गये अपने पत्र हार में उन्होंने बकायदा लिखा के जम्मू–कश्मीर के इस पूरे ले में आप का कोई अस्तित्व है। प्रश्न यह है कि आखिर स सांविधानिक अधिमिलन का शेख अब्दुल्ला को क्यों देना े? उसके पीछे इतिहास है। जिन्ना ने इस आधार पर पाकिस्तान का प्रश्न उठाया था कि हिन्दुस्तान में मुसलमान और हिन्दू एक साथ नहीं रह सकते, इसलिये मुसलमानों के लिये भारत का एक हिस्सा अलग कर देना चाहिये। नेहरु राजनीति के क्षेत्र में तो जिन्ना और उसके ब्रिटिश सहयोगियों को हरा नहीं सके, बल्कि उनकी विभाजन की माँग को स्वीकार ही कर लिया। लेकिन इस विभाजन से पैदा हुये अपने भीतरी अपराध बोध से निजात पाने के लिये, उन्हें जम्मू–कश्मीर एक अच्छा अवसर दिखाई देने लगा। यदि जम्मू–कश्मीर देश की सांविधानिक व्यवस्था में शामिल होने का निर्णय कर लेता है तो नेहरु दुनिया भर को यह बता सकेंगे कि जिन्ना झूठ बोलता था, मुसलमान तो अपनी इच्छा से भारत में रहना चाहते हैं, पाकिस्तान में शामिल नहीं होना चाहते। नेहरु का यह थीमिस तभी पूरा हो सकता था यदि भारत में अधिमिलन की इच्छा जम्मू–कश्मीर का कोई मुस्लिम नेता करे और उसी की माँग पर रियासत के भारत में अधिमिलन को स्वीकार किया जाये। नेहरु को विश्वास था कि रियासत के पांच संभागों (जम्मू, लद्दाख, कश्मीर, गिलगित, बल्तीस्तान) में से एक, कश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला ऐसा कर सकते हैं। नेहरु स्वयं भी कश्मीरी थे, इसलिये उनकी शेख के साथ स्वाभाविक मित्रता भी थी। नेहरु का यह भी विश्वास था कि शेख कश्मीर के मुसलमानों के एक मात्र नेता हैं और उन्हीं के कारण कश्मीर के मुसलमान भारत में अधिमिलन के लिये तैयार हो सकते हैं। शेख के बारे में नेहरु की पहली अवधारणा ठीक हो सकती थी लेकिन दूसरी गलत थी। बहुत क्षेत्रों के मुसलमान पाकिस्तान बनाने या उसमें जाने के इच्छुक नहीं थे। सीमान्त प्रान्त, यहाँ ६६ प्रतिशत मुसलमान थे, में मुस्लिम लीग पराजित हुई थी। पंजाब में जहाँ ६० प्रतिशत मुसलमान थे, वहाँ भी मुस्लिम लीग हारी थी और यूनियननिस्ट पार्टी जीती थी।

इसी प्रकार कश्मीरी मुसलमानों का इतिहास, परम्परा अलग थी और वे इस कारण पाकिस्तान में जाने के लिये लालायित नहीं थे। नेहरु इसे शेख के प्रभाव के परिणाम मान बैठे थे। नेहरु की इस मानसिकता की पृष्ठभूमि में आसानी से समझा जा सकता है कि यदि यह प्रचारित हो जाये कि जम्मू–कश्मीर को देश की नई संघीय सांविधानिक व्यवस्था का हिस्सा महाराजा हरिसिंह ने बनाया है तो नेहरु मानसिक रुप से भारत विभाजन के अपराध बोध से कैसे मुक्त हो सकते थे? इसलिये उन्होंने एक साथ महाराजा हरिसिंह को धकियाना शुरु किया और शेख अब्दुल्ला को महिमा मंडित करना शुरु किया। यही कारण है कि नेहरु की कल्पना के कारकों पर किया गया यह प्रयोग अपने जन्म

से ही गलत रास्ते पर चल पड़ा।

शेख अब्दुल्ला नेहरु के मनोविज्ञान और उनके अपराध बोध को जल्दी ही समझ गये और उन्होंने जल्दी ही इसकी कीमत वसूलना शुरु कर दिया। विभाजन के उपरान्त जम्मू–कश्मीर का प्रयोग, राज्य के तीनों संभागों (शेष दो संभागों गिलगित और बल्तीस्तान पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया था और नेहरु ने उसे मुक्त करवाना इसलियें जरुरी नहीं समझा क्योंकि वहाँ के लोग शेख की पार्टी से ताल्लुक नहीं रखते थे और न ही उसे अपना नेता मानते थे। वहां के लोगों और महाराजा हरिसिंह के साथ संयुक्त रुप में संवाद के साथ करना चाहिये था, लेकिन नेहरु इसे बाकी तीनों को दरकिनार कर केवल कश्मीर के और वह भी केवल शेख अब्दुल्ला के सहारे, करना चाहते थे। इससे भी बढ़ कर नेहरु कश्मीर संभाग में मुसलमानों की बहुसंख्यक देख कर एक बार फिर तुष्टीकरण के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करने के रास्ते पर चल निकले थे। ध्यान रहे एक बार पहले भी बाबा साहिब आम्बेडकर ने कांग्रेस को इसी मुस्लिम तुष्टीकरण के रास्ते से बचने की सलाह दी थी, क्योंकि इसके परिणाम अशुभ ही निकलते हैं। संवाद हीनता से उपजा यह प्रयोग शेख अब्दुल्ला के भीतर केवल तानाशाह प्रवृत्तियाँ ही नहीं बल्कि स्वतंत्र होने तक की इच्छाएँ जगाने लगा था। लेकिन प्रयोग के इस स्टेज तक आते–आते सरदार पटेल की मृत्यु हो चुकी थी, नहीं तो शायद वे ही इसमें कुछ दखलअंदाजी करते और प्रयोग को सही दिशा में ले जाकर इसे डूबने से बचा लेते।

ऐसी स्थिति में राज्य के ही एक–दूसरे सशक्त राजनैतिक दल प्रजा परिषद ने इस प्रयोग को संतुलित करने का प्रयास किया और माँग की कि राज्य की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को देखते हुये सभी संभागों की भागीदारी सुनिश्चित कीं जाये। सबसे बड़ी माँग तो यह थी कि कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की अपनी असफल हो चुकी नीति को आधार बना कर जम्मू–कश्मीर में यह नया प्रयोग न करें बल्कि इसका आधार पंथ निरपेक्षता होना चाहिये। नेहरु मुस्लिम तुष्टीकरण के चक्कर में पूरे राज्य को केवल कश्मीर बना देना चाहते थे और जम्मू व लद्दाख को उसके उपनिवेश। प्रजा परिषद का आन्दोलन देखते–देखते जम्मू व लद्दाख समेत कश्मीर के कुछ हिस्सों में भी फैल गया। शेख ने नेहरु के पूरे समर्थन से इस आन्दोलन को बल पूर्वक दबाना चाहा। पन्द्रह लोग पुलिस की गोलियों से शहीद हो गये। इसी आन्दोलन में सहायता करने के लिये और शेख अब्दुल्ला से बातचीत करने के लिये डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जम्मू–कश्मीर गये थे ताकि तीनों संभागों की समानता के आधार पर सहभागिता सुनिश्चित की जा सके। लेकिन सरकार ने बातचीत करने की बजाये उन्हें जेल में डाल दिया और वहीं रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मौत हो गई। कांग्रेस तभी से लेकर अब तक इस प्रयोग को इसी लाईन पर चला रही थी। यही कारण था कि राज्य में हालात बद–से–बदतर होते गये और तीनों संभागों में खाई बढ़ती गई।

प्रथम प्रधानमंत्री ने जम्मू–कश्मीर में जो प्रयोग शुरु किया था और जिसके गलत उपकरणों के कारण नतीजे भयानक आ रहे थे, पन्द्रहवें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसी प्रयोग को एक बार फिर लीक पर लाने का प्रयत्न किया है। अब की बार का यह प्रयोग नेहरु की मानसिक कल्पनाओं पर आधारित नहीं है, बल्कि राज्य की जमीनी सच्चाईयों पर आधारित है। जम्मू संभाग में भारतीय जनता पार्टी ने पच्चीस सीटें हासिल की थीं। इतना ही नहीं बल्कि प्राप्त मतों के लिहाज से उसे राज्य में सबसे ज्यादा मत प्राप्त हुये थे। सीटों के हिसाब से पीडीपी २८ के आँकड़े पर पहले नम्बर पर थी लेकिन प्राप्त मतों के लिहाज से भाजपा के बाद दूसरे नम्बर पर रही। मोटे तौर पर भाजपा जम्मू संभाग और पीडीपी कश्मीर संभाग के लोगों की महत्त्वकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है, ऐसा कहा जा सकता है। कांग्रेस और नेशनल कान्फ्रेंस १९४७ से लेकर अब तक राज्य में जिन कारकों को आधार बनाकर

शेष पृष्ठ 10 पर

Thearyasamaj.org

सुरसा की तरह पसरता बोतलबंद पानी का धंधा

✍ डॉ. विनोद बब्बर

हवा, पानी ईश्वर की ओर से प्राणी जगत को वरदान कहे जाते थे। कहा तो यहां तक जाता था कि जिस वस्तु की जितना आवश्यकता तीव्र है उसका दाम उतना ही कम है। जैसे हवा बिल्कुल मुफ्त क्योंकि उसके बिना एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता। पानी भी नाम मात्र के दाम पर क्योंकि उसके बिना कुछ घंटे भी रहना संभव नहीं। भोजन तथा अन्य चीजे उससे महंगी। मांग की तीव्रता ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है दाम भी बढ़ने लगते हैं। परंतु लगता है कि पानी के मामले में यह सिद्धांत नकारा हो रहा है। दुःखद आश्चर्य तो यह है कि जिस देश में प्याऊ लगाने की सदियों से परम्परा रही हो वहां पानी की तथाकथित शुद्धता के नाम पर करोड़ों-अरबों का वारा न्यारा करने वाला एक तंत्र सक्रिय होना किसी को अपराधबोध तो दूर असंतुष्ट तक नहीं करता है।

एक महापुरुष द्वारा पानी के लिए विश्वयुद्ध होने की भविष्यवाणी तो सुनी थी लेकिन गर्मी शुरु होते ही महत्वपूर्ण स्थानों पर पानी की रेहड़ी लगाने के लिए पानी कम्पनियों को हर तरह के हथकंड़े अपनाते देख आश्चर्य हुआ। लगा जैसे मामूली सी बात पर विवाद करना समझदारी नहीं है लेकिन जब असलियत सामने आई तो पानी -पानी होने के अतिरिक्त कुछ बचा ही कहां? पानी का 'धंधा' करने वाले भूजल को चलताऊ तरीके से छान कर बोतलों, जारों में पैक करते हैं। फिल्टर पानी को हल्का नीला करने के लिए उसमें कैमिकल तक मिलाये जाते हैं।

रेहड़ी वाले ही क्यों, देशभर में बोतलबंद पानी के नाम पर मनमानी हो रही है। आज देश में बोतलबंद पानी का व्यापार करने वाली हजारों कम्पनियां है। पानी के पाउच वाली छोटी कम्पनियों की तो कोई अधिकृत संख्या ही नहीं है। करोड़ों, अरबों रुपए का व्यवसाय बन चुका यह धंधा सुरसा की तरह फैल रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि महंगा और 'कीटाणुनाशक' होने के दावे के कारण बोतलबंद पानी को स्वास्थ्य के लिए बेहतर बताया जाता है जबकि अनेक अध्ययनों ने इन दावों को खोखला साबित किया हैं। साफ और शुद्ध के अंतर को समझने वाला कोई नहीं। पानी साफ बेशक हो परंतु बोतल भी प्रदूषित हो सकती है। बोतल के सील होने के बाद यह बिकने से पहले महीनों स्टोर में पड़ा हो सकता है। इसके अतिरिक्त बोतल को खोलने के बाद इसे कुछ ही घंटों में निपटाना जरूरी हैं। यह भी सर्वविदित है कि पानी को शुद्ध करने वाली मशीनों और पद्धतियों की भी सीमा है। ये कीटनाशकों को पानी से निकालने में लगभग अक्षम है।

विश्व में सर्वप्रथम बोतलबंद पानी की शुरुआत 'पोलैंड स्प्रिंग ब टल्ड वाटर' ने १८४५ में की तो मुम्बई भारत में १९६५ में इटली के सिग्नोर फेलिस की 'बिसलरी' ने यह सिलसिला शुरु किया। आज भी भारत के बोतलबंद के आधे से अधिक व्यापार पर बिसलरी का कब्जा है। वास्तव में नदियों और भूजल में औद्योगिक कचरों के प्रवेश ने जल प्रदूषण को बढ़ाया है तो इस समस्या का समाधान करने की बजाय दिखावा और शोर करने से लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंता बढ़ी। शतिर लोगों ने इसका भयादोहन करते हुए जन-मन में यह बात बैठाने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की कि अगर स्वस्थ रहना हो तो बोतलबंद पानी का इस्तेमाल करो। अंधाधुंध प्रचार और विज्ञापनों ने साधन संपन्न लोगों को बोतलबंद पानी की ओर धकेला। मध्यम वर्ग भी इसी रास्ते पर बढ़ता गया। पानी के लिए 'पानी की तरह' पैसा बहने लगा। इतना होने पर भी

शेष पृष्ठ 11 पर

शिक्षा की दशा और दिशाहीनता

✍ मिथिलेश सिंह

आनलाइन खबरें पढ़ते हुए दो खबरों पर मेरी नजर रुक गयी। हालाँकि, यह मुद्दा सनसनी पैदा करने वाला नहीं है, किन्तु हमारी जड़ों को खोखला करना अथवा मजबूत करना बहुत कुछ इसी मुद्दे के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। पहली खबर बिहार से थी, जहाँ पटना में आयोजित एक सम्मेलन में शामिल होने गए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को एक बच्चे ने निःशब्द कर दिया। दरअसल सम्मेलन में नालंदा के रहने वाले सात साल के कुमार राज ने बिहार की शिक्षा व्यवस्था पर भाषण देने के क्रम में हमारी शिक्षा व्यवस्था की पोल खोलते हुए कहा कि सरकारी और निजी स्कूलों की व्यवस्था दो तरह की अमीरों के लिए अलग जिनके बच्चे नामी प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने जाते हैं और गरीबों के लिए अलग जिनके बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। इससे साफ मालूम चलता है कि प्राइवेट स्कूलों की अपेक्षा सरकारी स्कूलों में शिक्षा का घोर अभाव है। आखिर क्या कारण है कि कोई भी डॉक्टर, इंजीनियर, वकील यहां तक कि उस स्कूल के शिक्षक भी अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहते। यही वजह है कि हम बच्चे हीन भावना का शिकार हो जाते हैं। बच्चे के भाषण पर तालियां तो खूब बजीं, किन्तु चिकने घड़ों पर एक मासूम की बात का भला क्या असर होगा। शिक्षा व्यवस्था से सम्बंधित, जिस दूसरी खबर ने ध्यान खींचा, वह जम्मू कश्मीर से है। जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट ने ओपन कोर्ट में एक टीचर को गाय पर लेख लिखने और क्लास चार के गणित के सवाल को हल करने के लिए कहा। जब टीचर इसमें नाकाम रहा तो कोर्ट ने मुकदमा दर्ज करने को कहा। इसके साथ ही जज ने राज्य के एजुकेशन सिस्टम पर कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि निर्जीव प्रशासन को शिक्षा की दुकानें बंद कर देनी चाहिए। इन दोनों खबरों से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारी शिक्षा व्यवस्था आखिर किस दशा में है। आपको इस तरह के हजारों उदाहरण, लगभग भारत के हर एक प्रदेश से मिल जायेंगे। कुछ प्रदेशों में तो बाकायदा स्कूलों की छतों और दीवालों पर चढ़कर नक्ल कराती तस्वीरें सोशल मीडिया पर जबरदस्त तरीके से वायरल हो जाती हैं। शिक्षा की इस दुर्दशा से अलग हटकर यदि हम इसकी दिशाहीनता की बात करते हैं तो यहाँ भी तस्वीर बेहद निराशाजनक है। इस सन्दर्भ में, मैंने आज ही इंटरनेशनल बेस्ट-सेलर किताब 'रिच डैड, पूअर डैड' पढ़नी शुरु की। इस किताब के लेखक रोबर्ट टी. कियोसाकी ने शुरूआती पन्नों में ही बड़े स्पष्ट ढंग से समझाया है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था बदलते समय और चुनौतियों से मुकाबला करने में कतई सक्षम नहीं हैं। इसी किताब में कहा गया है, जो लगभग प्रत्येक रिसर्च में सिद्ध भी हो चुका है कि अमीरों और गरीबों के बीच फासला लगातार बढ़ता जा रहा है और ऐसा पूरी दुनिया में हो रहा है। थोड़ा अल ा हट कर सोचें तो यह साफ दिख ा है कि दुनिया के जो भी मिलेनियर या बिलेनियर हैं, वह स्कूली अथवा कालेज शिक्षा में बहुत मेधावी नहीं रहे हैं। इन समस्त कड़ियों को मिला दिया जाय तो यह बात भी कही जा सकती है कि आज की शिक्षा-नीति व्यक्तियों को पैसे बनाने के तरीके बताने में भी बहुत सक्षम नहीं है। ढेर सारे साक्षर, मगर बेरोजगार युवकों की फौज भी इस बात की तस्दीक करती है। पैसा कमाने के अतिरिक्त, शिक्षा का जो दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलु है वह है किसी व्यक्ति के

जीवन-स्तर में सुधार आना। इस विषय पर यदि बातचीत न ही की जाय तो बेहतर रहेगा। आखिर, तनाव, बीमारियां, परिवारों की टूटन, तलाक इत्यादि बढ़ रही मानवीय समस्याओं से हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था किस हद तक निपट पा रही है, इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। गाहे-बगाहे नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग चलती रहती है, किन्तु शामिल तो क्या होगा जो पुराना सम्बंधि पाठ्यक्रम है, उसे ही समूल से हटा दिया गया है। हमार नयी सरकार की १२ वीं पास मानव संशाधन मंत्री पर काफी कुछ कहा जा चुका है, किन्तु शिक्षा पर उठ रहे सवाल जस के तस हैं। भारत में आखिर, अंग्रेजों के जमाने से चले आ रहे पाठ्यक्रम से हमें क्या हासि हो रहा है और हमें शिक्षा-नीि में किस तरह के बदलावों क जरूरत है, इस पर जब तव सरकार एक श्वेत-पत्र जार करके बदलाव करने की कोशि शुरू नहीं करती है, तब तक ह निराशा के भंवर में ही डूबे रहन होगा। साथ ही साथ हमा वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'कौशल-विकास' का स अधूरा ही रह जायेग

hearyasamaj.org

A MISUNDERSTOOD NATIONAL LEADER

Prof Rakesh Sinha

A true national leader in words and actions, Dr Ambedkar will always be remembered as a leader who worked in letter and spirit to bring social equality and harmony in practice through social transformation.

Historical events d personalities are alysed and explained with fferent perspectives. In this ocess, our perceptions out past, understanding of e present and aspirations r the future has obvious influence. We try to fit personties and incidents in our vn frames to enrich our unrstanding and analysis. is in turn distorts the hisrical events and personalis. Dr Ambedkar is perps the greatest victims of is process. Most of us try interpret his philosophy d actions with the suitabil- of our present frames. Our ability to see him in totality duces him to be a Dalit on, which is not true. His nvass was much bigger d the role was epochal. In e word 'nation-building' n be considered as his re project.

A civilisation has to through socio-cultural heaval while taking shape a nation. In the process nation-building, history s brings not only the past ry and heritage but also ngs the tragic and unforate situations with it. Our lity to adapt these tragic l unfortunate situations o constructive and posi- conditions keeps the ilisation alive. Dr bedkar was the great ial warrior of the same king. He considered the qualities in the Hindu soy as the symbol of lisational lacuna and cated his life to eradicate incompleteness. Many rs also thought and ked to eradicate this ace of caste inequalities; Dr Ambedkar rightly d them as 'nurse' while idering himself as a her' of exploited dalits.

There was no place nmity and hatred in edkar's political thinkHe was fighting against ichotomies, contradictions and evils of the Hindu society and not the Hindu society and civilisation itself.

Ambedkar was well aware of the fact that culture is the basis of India's unity and integrity and it can be the source for other transformations. His saying that social and cultural revolutions have preceded the political revolutions in this civilisation is indicative enough to understand his thinking. While exemplifying this he underlines that prior to the political rise of Chandragupta, there was a socio-cultural revolution by Lord Buddha, and before the success of Chatrapati Shivaji, the seeds of socio-cultural change were sown by the Bhakti movement.

Like Ambedkar, founding leader of RSS Dr Hedgewar's mainstay was also focused on socio-cultural transformation. Both believed that socio-cultural change can only influence the individual, social and national consciousness, and can bring constructive, creative and experimental approach in our national life. Dr Hedgewar through his proposition of 'one people' talked about the equality and common approach on core national issue. Because Ambedkar wanted to use political instruments for bringing equality and common approach, but only after socio-cultural change, did he see a possibility of change in RSS and therefore, he had a natural sense of respect towards the organisation. Both Ambedkar and Gandhi knew very well that it is easy to pronounce political unity and social equality but percolating it in the national life is a difficult task.

In 1920s and 30s, many people were hoisting the flag of social equality but those progressive voices remained confined to resolutions and speeches. On the contrary, through his approach and efforts, Dr Hedgewar proved that sincere efforts could yield desired results. It is said, both Gandhi and Ambedkar were surprised to see the complete absence of caste discrimination in RSS camps and became admirers of Dr Hedgewar and his work.

In his Marathi newspaper Mook Nayak, Ambedkar insisted that practicing equality in life is much more important than theorising it. It was his desire to remove ills which were hurdles in becoming 'one people' and 'one nation'. According to him, untouchability was the biggest hurdle in achieving this. Hence, to achieve social equality, during the period 1920 to 1930, he appealed for Satyagrah for social change. Through Mook Nayak, established in 1920, he created a ground for social reforms but simultaneously tried to bring the marginalised castes in the national movement for independence. Unfortunately, these castes were prevented from joining the political movement, as they were discriminated on socio-cultural basis.

His Satyagrahas at Mahad for water, and temple entry at Nasik and Pune clearly reflect his philosophy of socio-cultural transformation. There was no place for enmity and hatred in his political thinking. He was fighting against the dichotomies, contradictions and evils of the Hindu society and not the Hindu society and civilisation itself. His ultimate objective was to nurture and strengthen Indian civilisation and nationalism. At that time, it was a big blow to the anti-India thinking which was trying to instigate dalits and marginalised to adopt the path of separatism and violence.

He was aware that the biggest threat to any nation is internal rather than external. In the Constituent Assembly he raised the question that on January 26, 1950, we would be a republic but what would happen to our independence? Taking historical references he reminded the representatives in the House that we had lost independence earlier due to internal weaknesses, and that it was important to see that that it does not happen again. Prof Vivek Kumar in his seminar on ' Babasaheb Ambedkar's Ideas of Nation and Nation Building' said that Dr Ambedkar reminded us of Jaichand who betrayed the nation because of hatred. Whether the same kind of people would occupy the power positions was his major concern. And that through the Constituent Assembly, he had tried to give a call to the whole nation for introspection in this regard. He was the dedicated soldier of the nation. His personality, calibre and hard work was realised by everybody during the making of the Constitution. T T Krishnamachari, one of the important members of the drafting committee highlighted his role as the chairman of the drafting committee of the Constitution. He says, "Mr. President, Sir, I am one of those in the House who have listened to Dr Ambedkar very carefully. I am aware of the amount of work and enthusiasm that he has brought to bear on the work of drafting this Constitution. At the same time, I do realise that that amount of attention that was necessary for the purpose of drafting a constitution so important to us at this moment has not been given to it by the Drafting Committee. The House is perhaps aware that of the seven members nominated by you, one had resigned from the House and was replaced. One died and was not replaced. One was away in America and his place was not filled up and another person was engaged in State affairs, and there was a void to that extent. One or two people were far away from Delhi and perhaps reasons of health did not permit them to attend. So it happened ultimately that the burden of drafting this constitution fell on Dr. Ambedkar and I have no doubt that we are grateful to him for having achieved this task in a manner which is undoubtedly commendable."

This explains his role and dedication for nation building in the most succinct way. We should be grateful

conitnued on page no. 11

Thearyasamaj.org

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

वीर सावरकर जयंती धूमधाम से संपन्न, हिन्दू महासभा ने अखंड हिन्दू-राष्ट्र के निर्माण का प्रण दोहराया

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, गुजरात प्रदेशाध्यक्ष महेंद्र भाई परमार, गुजरात प्रदेश महामंत्री महेंद्र भाई पटेल, झारखण्ड प्रदेश के महामंत्री ईश्वर चन्द्र गुप्ता, आधुनिक क्रान्तिकारी राणा संग्राम सिंह, वरिष्ठ हिन्दू महासभा कार्यकर्त्ता देवदत्त त्यागी, दिल्ली प्रदेश संगठन मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने आधुनिक हिन्दू राष्ट्र के निर्माता स्वातंत्र्य वीर सावरकर की जयंती पर अखंड हिन्दू राष्ट्र के निर्माण के लिए हुंकार भरी। हिन्दू महासभा के केंद्रीय मुख्यालय, हिन्दू महासभा भवन में स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक वीर सावरकर के योगदान और त्याग को याद करके भावुक हो उठे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सावरकर ने बचपन में अपने मां–बाप को खो दिया था जिसके बाद उनके बड़े भाई ने उनकी परवरिश की। पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज से बी.ए. करने के पश्चात उन्होंने सन १८५७ ई. में लड़े गए पहले भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर किताब लिखी, जिसके उपरांत भारतीयों के योगदान को समझा गया। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई के दौरान उनकी मुलाकात क्रांतिकारी लाला हरदयाल से हुई जिसके बाद वह कट्टर क्रान्तिकारी बन गये। अपने जीवन काल में उन्हें दो बार आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने वीर सावरकर का सबसे बड़ा योगदान 'मुस्लिम तुष्टिकरण का विरोध' करना बताया। आजादी के पहले वीर सावरकर महात्मा गांधी और समकक्ष नेताओं को मुस्लिम तुष्टिकरण से दूर रहने को बार–बार कहते रहे, लेकिन कांग्रेसी नेताओं ने सावरकर की एक नहीं सुनी, जिसके कारण देश का बटवारा तक हो गया। इस दौरान हिन्दू महासभा के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने देश को एक बार पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए अखिल भारत हिन्दू महासभा को देश भर में मजबूत बनाने का संकल्प व्यक्त किया।

हिन्दुओं को समझना चाहिये कि

- संस्कृत विश्व की सबसे समृद्ध भाषा है। उसमें शब्द संख्या 10 करोड़ है।
- अंग्रेजी के मूल शब्द केवल 35 हजार हैं।
- हिन्दी के मूल शब्द 9 लाख हैं।
- हिन्दी 85 करोड़ लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है।
- अंग्रेजी मात्र 32 करोड़ लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है।
- भारतीय भाषायें विश्व की सर्वाधिक सम्पन्न भाषायें हैं। इनकी रक्षा का संकल्प लें।

जनहित में जारी :

अखिल भारत हिन्दू महासभा

शेष पृष्ठ 7 का

जम्मू कश्मीर में नया प्रयोग.......

प्रयोग कर रहीं थीं, लोगों ने उसे मोटे तौर पर ठुकरा दिया है। यह ठीक है कि चुनाव से पूर्व पीडीपी और भाजपा जिस एजेंडा को लेकर मतदाताओं के पास गई थी, वे वैचारिक स्तर पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव ही कहे जा सकते हैं। विकास, अच्छा प्रशासन, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन, ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें कोई भी राजनैतिक दल अलग स्टैंड नहीं ले सकता और न ही लेता है। इन मामलों में तो व्यक्ति और राजनैतिक दलों की विश्वसनीयता ही मुख्य होती है। इन मुद्दों पर कांग्रेस–नेशनल कान्फ्रेंस का ग्राफ राज्य की जनता की नजर में बहुत नीचे गिरा हुआ है। पीडीपी–भाजपा को अभी परखा जाना है। लेकिन जम्मू–कश्मीर में असली झगड़ा दोनों पार्टियों में वैचारिक स्तर पर रहा है। राज्य की पहचान क्या है? क्या किसी प्रान्त ही पहचान मजहबी आधार पर निश्चित की जा सकती है? क्या केवल मुस्लिम बहुल होने से ही किसी प्रान्त को विशेष दर्जा दिया जा सकता है? ये तमाम प्रश्न हैं जो जम्मू–कश्मीर के तीनों संभागों में अलग–अलग अर्थों में गूँजते रहते हैं। लेकिन इनका उत्तर नहीं मिल पाता क्योंकि जम्मू लद्दाख और कश्मीर संभाग में अविश्वास की खाई बढ़ाने में पूर्ववर्ती शासकों ने अपने राजनैतिक हित साधने के लिये बहत बड़ी भूमिका अदा की है।

पीडीपी और भारतीय जनता पार्टी की यह सरकार इस खाई को पाटने की दिशा में साहसी प्रयोग है। एक बार जम्म लद्दाख और कश्मीर संभाग के लोगों में परस्पर संवाद और विश्वास के सेतु निर्माण हो जाते हैं, तो वे सभी प्रश्न जो आज हिमालय जितने ऊँचे दिखाई देते हैं, जेहलम की लहरों जैसे तरल और संगीतमय हो जायेंगे। जम्मू–कश्मीर में नई सरकार का गठन इस नये प्रयोग की शुरुआत है। इसका प्रभाव केवल जम्मू–कश्मीर ही नहीं बल्कि पूरे देश में पड़ेगा। इसकी सफलता की कामना की जानी चाहिये और पीडीपी व भारतीय जनता पार्टी दोनों के ही नेतृत्व को बधाई दी जानी चाहिये।

शेष पृष्ठ 6 का

देश का नवाँ राज्य.......

१६. जनता पार्टी ने कई वर्ष पहले अल्पसंख्यक आयोग बनाने का प्रस्ताव रखा तो भाजपा ने खुलकर साथ दिया।

१७. बेलगांव तथा निकट के कस्बों–गांवों में मराठी भाषी बहुमत में हैं। उनकी पार्ट का नाम है– महाराष्ट्र एकीकरण समिति। इन क्षेत्रों से समिति के ५–६ विधायव चुने जाते हैं। समिति की मुख्य मांग है कि इन सीमावर्ती क्षेत्रों का विलय महाराष्ट्र में किया जाए। तीनों मुख्य दल मांग पूरी करने को तैय्यार नहीं हैं

१८. भाजपा ने तो बेलगांव को जानबूझकर उपराजधानी बना दिया है ताकि समिति का प्रभाव कम हो जाए और मांग दब जाए।

१६. कावेरी नदी कर्नाटक से शुरू होकर केरल होते हुए तमिलनाडु तक जाती है कई वर्षों से विवाह चल रहा है। कर्नाटक में किसी पार्टी की सरकार हो व निर्णय मानने को तैय्यार नहीं है।

२०. जब बोडोलैण्ड में उग्रवादियों ने बंगलादेशियों को भगाना शुरू किया तो बंगलू के मुस्लिमों ने पूर्वोत्तर भारतीयों को ऐसी कड़ी भाषा में कहा कि वे बंगलूरु चले जाएं। वे घबरा कर जान लगे। भाजपा सरकार और संघ परिवार उनक पलायन रोक नहीं सके। यह असफल–कमजोर तथा भ्रष्ट सरकार सिद्ध हुई

२१. विधान सभा चुनाव में बूढ़ी कांग्रेस ने नौजवान भाजपा को करारी हार का मज चखाया और वह सत्ता में आ गई।

इन्द्रदेव गुलाटी

शेष पृष्ठ 2 का

ब्रह्मज्ञानी गुरु अर्जुन.......

वाणी है। सुखमनी साहिब मानसिक तनाव की अवस्था का शुद्धीकरण भी करती है प्रस्तुत रचना की भाषा भावानुकूल है। सर ब्रजभाषा एवं शैली से जुड़ी हुई यह रचना गु अर्जुन देव जी की महान पोथी है।

गुरु अर्जुन देव जी की वाणी की मूल–संवेदना प्रेमाभक्ति से जुडी है। गुरमति विचारधारा के प्रचार–प्रसार में गुरु जी की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। गुरु ने पंजाबी भाषा साहित्य एवं संस्कृत को जो अनुपम देन दी, उसका शब्दों में वर्णन न किया जा सकता। इस अवदान का पहला प्रमाण ग्रंथ साहिब का संपादन है। इस त जहां एक ओर लगभग ६०० वर्षों की सांस्कृतिक गरिमा को पुनःसृजित किया गया, व दूसरी ओर नवीन जीवन–मूल्यों की जो स्थापना हुई, उसी के कारण पंजाब में नवीन–यु का सूत्रपात भी हुआ।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

earyasamaj.org

onitnued from page no. 9

A MISUNDERSTOOD.....

r him for the same but by limiting his contribution to the onstitution making process makes our gratitude incomplete. mbekar is not just a name but a message. That is message of making touchability an issue of 'do or die'. It is also message of fighting e conservative and reactionary forces for the sake of social unity. is also a message for building organisation of able and dedicated dividuals who are committed for creating a healthy social envinment for the entire Hindu society. The call given by RSS for One Well, One Temple and One Crematorium' opens up that possility of giving practical dimensions to the efforts of Dr Ambedkar, andhi and Dr Hedgewar.

Ambedkar believed that in the past untouchability was addressed mbolically. Therefore, it became more of apolitical issue rather an a question of social revolution. While clarifying he said in 1920s t of 1 Crore 30 Lac rupees collected under the Tilak Swaraj Fund the Congress, only Rs 7000 were spent on constructive ogramme and empowerment of untouchables.

He said, an alternative to this symbolism is social ansformation, which we all will have to carry out to effect change.

To bring about social transformation, Dr Ambedkar had then arted his journey with the publication of Mook Nayak and took it the level of Prabuddha Bharat in his last leg of life. A true national ader in words and actions, for his ideas and work, Dr Ambedkar all always be remembered as a leader who worked zealously in tter and spirit to bring about social equality and harmony in prace through social transformation.

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।

हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

ार्षिक...150/- रुपये
द्विवा ....300/- रुपये
ाजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
ा :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

सुरसा की तरह पसरता........

जनसंख्या का एक छोटा सा वर्ग ही बोतलबंद पानी तक अपनी पहुंच बना सका है। यदि इतनी ऊर्जा और संसाधन नदियों को साफ करने के नाम पर लगाई जाती तो सभी को शुद्ध जल मिल सकता था। परंतु ऐसा लगता है कि तत्कालीन सरकारों ने अपनी इस नैतिक जिम्मेवारी से पल्ला झाड़ते हुए इस बुनियादी जरूरत को बाजारवाद के हवाले कर दिया। यहां तक कि खुद सरकार भी (रेल नीर, दिल्ली जल बोर्ड के वाटर एटीएम इसके उदाहरण है) पानी के धंधे में उतर गई। मुफ्त पानी का ढोल पीटने वाले भी इसी राह पर हैं। 'नेचुरल रिसोर्सेज डिफेंस काउंसिल' का अध्ययन है कि बोतलबंद पानी और साधारण पानी लगभग समान है। मिनरल वाटर के नाम पर बेचे जाने वाले बोतलबंद पानी के बोतलों को बनाने के दौरान एक खास रसायन पैथलेट्स का इस्तेमाल किया जाता है जो बोतलों को मुलायम बनाता है। यही रसायन सौंदर्य प्रसाधनों, इत्र, खिलौनों आदि के निर्माण में भी प्रयुक्त होता है। सामान्य से थोड़ा अधिक तापमान होते ही यह रसायन पानी में घुलने लगते हैं जो हमारे शरीर में जाकर अनेक प्रकार के दुष्प्रभाव दिखाते हैं। एंटीमनी नाम के रसायन से बनी बोतल में बंद पानी जितना पुराना होता जाता है उसमें एंटीमनी की मात्रा बढ़ने से उसका उपयोग करने वाले को जी मचलना, उल्टी और डायरिया की शिकायत हो सकती है। स्पष्ट है कि हमारे मिट्टी के घड़े और सुराही के मुकाबले में बोतलबंद पानी कहीं नहीं ठहरता। इसका बढ़ती मांग शुद्धता और स्वच्छता से अधिक एक फैशन और 'स्टेटस सिंबल' बनती जा रही है। बोतलबंद पानी की प्रथा ही अपने आप में नुकसानदायक है। प्रतिदिन लाखों बोतलें इस्तेमाल के बाद कचरे बनकर पर्यावरण के लिए संकट बढ़ा रही है तो अनेक स्थानों पर इनकी अच्छी तरह से सफाई किये बिना इन्हें फिर से भरने के समाचार भी हैं। भारत तो फिलहाल इस खतरे से आंखे मूंदे बैठा है लेकिन सैन फ्रांसिस्को में बोतलबंद पानी की बिक्री रोक दी गई है। साल्ट लेक सिटी तो पहले ही ऐसा कर चुकी हैं। 'प्रकृति द्वारा प्रदत्त जीवन के लिए अत्यावश्यक है। इसका बाजारीकरण नहीं होना चाहिए' विषय पर महीने चली बहस के बाद यह निर्णय हुआ कि नागरिक अपनी बोतल साथ रखे। उन्हें उचित स्थानों पर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की जिम्मेवारी सरकार की होगी। क्या यह व्यवस्था भारत में नहीं हो सकती? आरंभ में रेलवे स्टेशनों पर बोतलबंद पानी की बिक्री पर रोक लगाकर एकाधिक फिल्टर लगाये जा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसपर होने वाला खर्च बोतलबंद पानी होने वाले खर्च की तुलना में काफी कम होगा। प्लास्टिक के कचरे से मुक्ति मिलेगी सो अलग। यदि सरकार इस जिम्मेवारी से बचना चाहती हो तो आरंभ में शुद्ध, शीतल जल की ऐसी मशीने लगाई जा सकती हैं जो एक रुपए का सिक्का डालने पर एक बोतल पानी जारी करे।

आश्चर्य है कि हम मुफ्त पानी के वादे पर आंख बंद करके लगभग एक तरफा फैसला सुनाते हैं लेकिन बोतलबंद पानी के लिए १५ से बीस रुपए चुकाते समय एक क्षण के सोचते तक नहीं। क्या कभी किसी ने भारत में बोतलबंद पानी की मनमानी कीमत के विरोध में जन आंदोलन का समाचार सुना है? शायद नहीं। स्पष्ट है कि अन्य वस्तुओं के मूल्यों में मामूली वृद्धि तो हमें बेशक आंदोलित करती हो परंतु बोतलबंद पानी के अनियंत्रित दाम से हमें कोई शिकायत नही हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

सीमा पार से आतंकी.......

७ घंटे तक गोलीबारी होती रही। सेना के एक अधिकारी ने कहा उस समय घुसपैठ का प्रयास विफल कर दिया गया। जब भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों का एक समूह नियंत्रण रेखा पार कर रहा था। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों से आमना– सामना हुआ और अंतिम खबर मिलने तक दोनों पक्षों की ओर से गोलीबारी जारी थी। अधिकारी ने कहा कि अभी किसी भी पक्ष की ओर किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। कुपवाडा जिले के तंगधार सेक्टर में एक हते के भीतर आतंकवादियों का यह घुसपैठ का दूसरा प्रयास है। गत २५ मई को आतंकी घुसपैठ के ऐसे ही प्रयास के तहत तीन सैनिक शहीद हो गए थे और एक आतंकवादी मारा गया था।

दिनांक 24 जून से 30 जून 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अष्टमी	24 जून	बुधवार
कमला एकादशी	28 जून	रविवार
त्रयोदशी	30 जून	मंगलवार

Thearyasamaj.org

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

डा. बी. आर. अम्बेडकर के अनमोल विचार

डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर एक बहुजन राजनीतिक नेता, और एक बौद्ध पुनरुत्थानवादी भी थे। उन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। अम्बेडकर ने अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म की चतुर्वर्ण प्रणाली और भारतीय समाज में सर्वत्र व्याप्त जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष में बिता दिया। हिन्दू धर्म में मानव समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया है। उन्हें बौद्ध महाशक्तियों के दलित आंदोलन को प्रारम्भ करने का श्रेय भी जाता है। डॉ. अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। अपनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों तथा देश की अमूल्य सेवा के फलस्वरूप डा. अम्बेडकर को 'आधुनिक युग का मनु' कहकर सम्मानित किया गया। डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ में हुआ था। वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई मुरबादकर की १४ वीं व अंतिम संतान थे। उनका परिवार मराठी था और वो अंबावडे नगर जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है, से संबंधित था। अनेक समकालीन राजनीतिज्ञों को देखते हुए उनकी जीवन–अवधि कुछ कम थी। वे महार जाति के थे जो अछूत कहे जाते थे। किन्तु इस अवधि में भी उन्होंने अध्ययन, लेखन, भाषण और संगठन के बहुत से काम किए जिनका प्रभाव उस समय की और बाद की राजनीति पर है। उस समय अंग्रेज निम्न वर्ण की जातियों से नौजवानों को फौज में भर्ती कर रहे थे। अम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत थे और भीमराव के पिता रामजी अम्बेडकर ब्रिटिश फौज में सूबेदार थे और कुछ समय तक एक फौजी स्कूल में अध्यापक भी रहे। उनके पिता ने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा की डिग्री प्राप्त की थी। वह शिक्षा का महत्त्व समझते थे और भीमराव की पढ़ाई लिखाई पर उन्होंने बहुत ध्यान दिया।

अनमोल विचार

- एक महान आदमी एक प्रतिष्ठित आदमी से इस तरह से अलग होता है कि वह समाज का नौकर बनने को तैयार रहता है।
- बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।
- एक सफल क्रांति के लिए सिर्फ असंतोष का होना पर्याप्त नहीं है। जिसकी आवश्यकता है वो है न्याय एवं राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों में गहरी आस्था।
- मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाई–चारा सिखाये।
- मैं किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं ने जो प्रगति हासिल की है उससे मापता हूँ।
- कानून और व्यवस्था राजनीतिक शरीर की दवा है और जब राजनीतिक शरीर बीमार पड़े तो दवा जरूर दी जानी चाहिए।
- जीवन लम्बा होने की बजाय महान होना चाहिए।
- मनुष्य नश्वर है। उसी तरह विचार भी नश्वर हैं। एक विचार को प्रचार–प्रसार की जरुरत होती है, जैसे कि एक पौधे को पानी की। नहीं तो दोनों मुरझा कर मर जाते हैं।
- जब तक आप सामाजिक स्वतंत्रता नहीं हासिल कर लेते, कानून आपको जो भी स्वतंत्रता देता है वो आपके किसी काम की नहीं।
- पति–पत्नी के बीच का सम्बन्ध घनिष्ठ मित्रों के सम्बन्ध के समान होना चाहिए।
- सागर में मिलकर अपनी पहचान खो देने वाली पानी की एक बूँद के विपरीत, इंसान जिस समाज में रहता है वहां अपनी पहचान नहीं खोता। इंसान का जीवन स्वतंत्र है। वो सिर्फ समाज के विकास के लिए नहीं पैदा हुआ है, बल्कि स्वयं के विकास के लिए पैदा हुआ है।
- हम भारतीय हैं, पहले और अंत में।
- हमारे पास यह स्वतंत्रता किसलिए है? हमारे पास ये स्वतंत्रता इसलिए है ताकि हम अपने सामाजिक व्यवस्था, जो असमानता, भेद–भाव और अन्य चीजों से भरी है, जो हमारे मौलिक अधिकारों से टकराव में है को सुधार सकें।

कबिरा खड़ा बजार में

मौसम के साथ बदलते मोदी

हमारे प्रधानमंत्री सियासी खेल के माहिर खिलाड़ी हैं। किस तरह लोगों को सपने दिखाने हैं और कब एक सपने से दूसरे सपने में पहुंचा देना है। इन सब में मोदी जी काफी दक्ष हैं। वह समय व मौके के साथ स्वयं और अपने वादों को बदल लेते हैं। सत्ता से दूर भाजपा की प्राथमिकताएं कुछ और थीं। उस समय मोदी जी किसानों के दर्द पर जान छिड़कने को तैयार थे, सत्ता के दलालों के लिए बीजेपी में गुस्सा था। पार्टी को विश्व बैंक की नीतियां गुलाम बनानेवाली प्रतीत होती थीं। लेकिन सत्ता में आते ही मोदी जी की प्राथमिकताएं बदल गयीं। अब कश्मीरी पंडितों की उम्मीद मुफ्ती के साथ सत्ता प्रेम तले दफन होने लगी। किसानों को विकास के जाल में फंसाने के उपाय खोजे जाने लगे हैं। राडिया टेपकांड की फाइल बंद कर दी गयी। बिहार में चुनावी जीत के लिए जिस पप्पू यादव की दबंगई के कसीदे पढ़े गये, वह दंबगई छूमंतर होने लगी। क्या दागी राजनीति और कॉरपोरेट राजनीति ही जीत का आखिरी चुनावी मंत्र है। और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हो या हिंदू राष्ट्रवाद या फिर राष्ट्रीय स्वाभिमान का सवाल, क्या सत्ता मिलने के बाद सब कुछ ठंडे बस्ते में डाल कर ही सत्ता चलायी जा सकती है। जिन सवालों को साल भर पहले नरेंद्र मोदी ठसक के साथ उठा रहे थे, वही सवाल अब सरकार चलाने में भारी पड़ रहे हैं। मौजूदा वक्त में प्रधानमंत्री मोदी जिस तरह विदेशी निवेश के जरिये विकास का जिक्र लगातार कर रहे हैं और उसी से हाशिये पर पड़ी जमात की तसवीर बदलने का सपना दिखा रहे हैं, उसके उलट स्थिति यह है कि १९९१ में भी भारत दुनिया के मानचित्र पर भुखमरी में पहले नंबर पर था और २०१४–१५ में भी पहले नंबर पर है। तो फिर विकास के नाम पर किसका विकास हो रहा है। १९९१ में १ अरब ३० करोड़ का विदेशी निवेश भारत में हुआ, जबकि २०१४–१५ में ३५ अरब डॉलर का विदेशी निवेश हुआ। लेकिन विदेशी निवेश के आसरे देश को विकास की राह पर लाने के दावे करने वाले इस आंकड़े से परेशान होंगे कि १९९०–९१ में देश में २१ करोड़ लोग भुखमरी के शिकार थे, २०१४–१५ में भी करीब १९.५ करोड़ भुखमरी के शिकार हैं। दावे करनेवाले कह सकते हैं कि तब आबादी कम थी, अब ज्यादा है। लेकिन समझना यह भी होगा कि इसी दौर में भारत के पड़ोस में भुखमरी के हालात में खासा सुधार हुआ है। चीन में १९९१ में २९ करोड़ लोग भुखमरी के शिकार थे, जिनकी संख्या घट कर १३ करोड़ रह गयी है। नेपाल में भुखमरी की स्थिति में ६५.६ फीसदी और भूटान में ४६.६ फीसदी की कमी आयी है। ये आंकड़े संयुक्त राष्ट्र के स्टेट ऑफ फूड इनसिक्योरिटी इन द वर्ल्ड की है। जिसके मुताबिक दुनियाभर में ७९.४ करोड़ लोग अब भी भुखमरी के शिकार हैं, जिनमें से १९.४ करोड़ लोग भारत में रहते हैं। तो अब सवाल यह भी है कि क्या विकास को लेकर देश में जो रास्ता अपनाया गया, वह गलत है। विकास से गरीबों को तो अब भी जोड़ा जा रहा है, पर जानकारों का कहना है कि आर्थिक सुधार के बाद से विकास का रास्ता सिर्फ बाजार तक पहुंचने वाले उपभोक्ताओं के लिए है। यह रास्ता मुनाफा बनानेवाली सोच को बढ़ावा देनेवाला है। भारत में भुखमरी की स्थिति में सुधार नहीं हुआ, पर बच्चों को पोषण और मिड–डे–मील स्कीमों के बजट में कमी हो गयी।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 17 जून से 23 जून 2015 तक
प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।